bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org संवत 2080 युगाब्द 5125 कुल पृष्ठ –32 जून द्वितीय अंक – 22

वर्तमान
कमल ज्योति

सर्वे सन्तु निरामया

₹20

सेवा सुशासन
और गरीब कल्याण

वर्तमान

कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय
कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक
नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

कोटिशः नमन्

सम्पादकीय

“ खुशहाल भारत के नव साल ”

भारतीय राजनीति में वर्तमान केन्द्र की सरकार के 9 साल के कार्य की चहुओर समिक्षा हो रही है। पूरी पार्टी का प्रत्येक सक्रिय कार्यकर्ता अपने बूथ को मजबूत करने में लगा है तो सम्पर्क अभियान में घर–घर जाकर मोदी जी के कार्य व योजनाओं का जन–जन तक पहुंचा रहा है। उ0प्र0 में सरकार के मंत्री, संगठन के पदाधिकारी सभी मनोयोग से जुटे हें। सरकार की उपलब्धियों को बताते हुए मुख्यमंत्री योगी कहते हैं कि सचमुच ये 9 वर्ष स्वतंत्र भारत के इतिहास में उपलब्धियों से भरा पड़ा है। आपने देखा होगा, जब अमेरिकी सीनेट को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी संबोधित कर रहे थे। अमेरिका दुनिया की महाशक्ति के रूप में जाना जाता है। वहां पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के स्वागत के लिए अमेरिकी सीनेट उतावली दिखाई दे रही थी। दुनिया का कोई ऐसा शख्स नही होगा आर्थिक जगत का भी जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मिलने के लिए उतावला न दिखाई दिया हो। ये नए भारत की नई पहचान है। जो प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के यशस्वी नेतृत्व में 9 वर्षों के अंदर भारत ने अर्जित किया है। वैश्विक मंच पर भारत को मिल रहा ये सम्मान, सामान्य सम्मान नही है।

21 जून को विश्व योग दिवस के अवसर पर दुनिया के 180 देशों में योग के साथ दुनिया की बड़ी शख्सियत योग से जुड़ी दिखाई दी। दुनिया आज योग के साथ जुड़कर भारत की आध्यात्मिक और ऋषि परम्परा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहा है।

भारत का विरासत की सम्मान देने का कार्यक्रम हो, या फिर भारत को दुनिया की आर्थिक महाशक्ति के रूप में स्थापित करने का कार्यक्रम। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में विगत 9 वर्षों के अंदर देखने को मिला है।

विरासत के प्रति सम्मान का भाव क्या होता है, ये प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नए भारत ने देखा है। ये भारत और श्रेष्ठ भारत की परिकल्पना को भी साकार करता है। ये तीर्थ और धाम है, जो हमारी पहचान है। यही हमारा इतिहास है, यही हमारा गौरव है और यही हमारी विरासत भी है।

अयोध्या में भगवान राम के भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य चल रहा है। केदारनाथ में केदारनाथ धाम और महाकाल में महालोक का निर्माण हो रहा है। गुजरात के सोमनाथ में सोमनाथ धाम के पुर्नउद्धार का भव्य कार्य चल रहा है। देश में हाइवे, रेलवे, एक्सप्रेस–वे, वाटर–वे, एयरपोर्ट आदि ये सभी सुविधाएं दी जा रही है। आज देश के अंदर इस क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन हुआ है। कल्पना करिये जब 1947 से 2014 तक देश के अंदर मात्र 74 एयरपोर्ट बने थे। 2014 से 2023 तक अब 74 नए एयरपोर्ट बनाए गए हैं। उन्होंने कहा कि यूपी में 1947 से लेकर 2017 तक मात्र 12 मेडिकल कॉलेज बन पाए थे। अब 2017 से 2023 तक उत्तर प्रदेश में 59 मेडिकल कॉलेज बन चुके है और जल्द ही हम वन डिस्ट्रिक्ट वन मेडिकल कॉलेज बनाने की ओर बढ़ रहे हैं। 1947 से लेकर के 2014 तक मात्र 6 एम्स बने थे और 2014 से लेकर 2023 तक 22 एम्स का निर्माण देश के अंदर हो चुका है। हर क्षेत्र में देश ने प्रगति की है, एक नई उड़ान भरी है।

आज 140 करोड़ लोगो भारत का निर्माण और एक नए भारत को देख रहे हैं। जब भारत अपनी आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा था और आजादी के अमृत काल के प्रथम वर्ष में प्रवेश किया तो, उस समय भारत के साथ दो बड़ी उपलब्धियां जुड़ी। एक जिस ब्रिटेन ने भारत पर 200 वर्षों तक शासन किया। उसे पछाड़कर, भारत दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बना है। वहीं दूसरी जी–20 देशों की अध्यक्षता भी भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत कर रहा है।

वर्तमान में 3.50 करोड़ लोगों को मात्र 9 वर्ष में गरीबों को सिर ढकने के लिए छत मिली है। वहीं उत्तर प्रदेश में 54 लाख गरीबों को आवास मिला है। देश में 12 करोड़ लोगों को फ्री में शौचालय और उत्तर प्रदेश में 2.61 करोड़ लोगों को शौचालय का लाभ मिला है। हर गरीब को स्वास्थ्य बीमा का लाभ, किसानों को किसान सम्मान निधि, फ्री वैक्सीन सिर्फ भारत ने ही दी है। भारत के 9 साल बेमिसाल है। भारत खुशहाल है और एक भारत और श्रेष्ठ भारत के प्रधानमंत्री मोदी जी के मिशन के साथ हम सबको जुड़ करके भारत को 2027 तक दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था को बनाने के रूप में स्थापित करना है, तो 2024 में एक बार फिर से प्रधानमंत्री मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार को लाना ही होगा। यह देश के हर नागरिक का संकल्प होना चाहिए।

भाजपा संगठनात्मक 98 जिले 80 लोकसभा की 174355 बूथों तक अपना सम्पर्क अभियान चलाकर इस ''संकल्प से सिद्धि'' की परिक्षा में पास होना चाहता है। जिसमें कार्यकर्ता का परिश्रम नीति, नियत, नेतृत्व इस अभियान के सफलता की गारण्टी है। कमल की विजय सुनिश्चित है।

bjpkamaljyoti@gmail.com

तुष्टिकरण नहीं, संतुष्टिकरण की राजनीति : मोदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भोपाल में 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' अभियान के अंतर्गत लगभग 10 लाख बूथों पर देशभर के भाजपा कार्यकर्ताओं को वर्चुअल संबोधित किया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि जनता से जुडाव रखें। मध्य प्रदेश की धरती का भाजपा को दुनिया का सबसे बड़ा दल बनाने में सबसे बड़ी भूमिका है। ऊर्जावान मध्य प्रदेश की धरती पर मेरा बूथ सबसे मजबूत कार्यकम का हिस्सा बनते हुए हृदय से आनंद आ रहा है। आज छह राज्यों को जोड़ने वाली पांच वंदेमातरम ट्रेन को झंडी दिखाने का मौका मिला। मध्य प्रदेश को दो वंदेभारत ट्रेन मिली हैं। अभी तक दिल्ली के सफर का आनंद ले रहे थे, अब इंदौर, जबलपुर का सफर भी आनंद दायक होगा। उन्होंने कहा कि आप पूरे समय बूथों पर डटे रहते हैं। मैं हमेशा अपडेट रहता हूं। भोपाल में आयोजित 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' कार्यक्रम, हमारे कर्मठ कार्यकर्ताओं के राष्ट्र निर्माण के संकल्प को नई ऊर्जा प्रदान करेगा। भाजपा की सबसे बड़ी ताकत आप हैं। मैं पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा, केंद्रीय नेतृत्व, मप्र नेतृत्व का आभार व्यक्त करता हूं क्योंकि मैं 10 लाख कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहा हूं। किसी राजनीतिक दल का इतना बड़ा कार्यक्रम नहीं हुआ होगा। बूथ का नेतृत्व करने वालों का सम्मेलन इतिहास में पहली बार हो रहा होगा। आप भाजपा ही नहीं देश की समृद्धि के मजबूत सिपाही हैं। दल से बड़ा देश है। ऐसे कर्मठ कार्यकर्ताओं से बात करना सौभाग्य की बात है। कार्यकर्ताओं पहले उनसे संवाद किया।

कार्यकर्ता राम पटेल की बात :

पटेल ने प्रधानमंत्री से पूछा कि आपने मंडल स्तर पर कार्यकर्ता बनकर काम किया। आप राजनीति के साथ सामाज से कैसे जुड़े रहे। इस पर उन्होंने कहा कि हमें बूथ को छोटा नहीं समझना चाहिए। इससे ऊपर उठकर समाज में पहचान बनानी चाहिए। प्रधानमंत्री और मुख्यमंत्री, बूथ कार्यकर्ता के आधार पर बनते हैं। हम वो

मोदी मंत्र

- समान नागरिक आचार संहिता समय की माँग
- कभी भी बूथ की इकाई को छोटा ना समझे
- हम एयरकंडीशन कमरे से पार्टी नहीं चलाते
- विपक्षी दलों द्वारा भ्रष्टाचार घोटाले की गारंटी
- हम गांव–गांव घूम कर खुद को खपाते हैं
- सबका साथ, सबका विकास के लिए कार्य
- वशंवाद, परिवार वादी पार्टियों से बचाने की जंग
- तुष्टिकरण नहीं संतुष्टिकरण की राजनीति
- बीजेपी की पहचान सेवा भाव की होनी चाहिए
- छोटे–छोटे गांव भी उपयोगी हो सकते हैं
- आप अपना अखबार पढ़ कर वहां दे सकते हैं
- आपकी सक्रियता से गांव के लोगों में विश्वास बढ़ेगा
- नेता, उम्मीदवाद कोई हो हमारा उम्मीदवार कमल है
- आप लोगों की समस्या के निदान में योगदान दे सकते है

पार्टी नहीं जो एसी कमरों में बैठकर फतवे जारी करते हैं। बूथ पर भाजपा की पहचान सेवाभावी की होनी चाहिए। इसके लिए छोटे–छोटे काम करने चाहिए। गांव में जहां बैठते हैं, वहां अखबार लाकर रख दें। केंद्र व राज्य और भाजपा की अच्छी खबर वहां लगाएं। फस्ट एड बाक्स लगा सकते हैं। ऐसा करके आप सामाजिक नेता बन जाएंगे। हैं। यूरिया की व्यवस्था बना सकते हैं। उनका यूरिया उठाकर ला देंगे, तो आपका नाम बन जाएगा।

आंध्रप्रदेश की सरला रामकृष्णन का प्रश्न :

प्रधानमंत्री मोदी ने सवाल के जवाब में कहा कि कार्यकर्ता के मन में और ज्यादा काम करने की भूख होना बड़ी बात। गांवों को विकसित करना होगा। गांव में हरियाली, सोलर एनर्जी, पानी पर काम करना होगा। दो साल में ये प्रयास होने चाहिए। इसे सरकार का काम नहीं मानें। जनता जनार्दन का काम सोचकर करें। बच्चे स्कूल से ड्रापआउट नहीं होंगे। इन कामों से आपका बूथ मजबूत होगा या नहीं होगा।

अगर उनकी घोटाले की गारंटी है, तो मोदी की भी एक गारंटी है – हर घोटालेबाज पर कार्रवाई की गारंटी। हर चोर–लुटेरे पर कार्रवाई की गारंटी। जिसने गरीब को लूटा है, जिसने देश को लूटा है, उसका हिसाब होकर रहेगा। जब कार्रवाई हो रही है, तब इनकी जुगलबंदी हो रही है।

****

अगर किसी के परिवार को, किसी के बेटे–बेटी को बचाना है तो कांग्रेस, सपा, आरजेडी, एनसीपी, नेशनल कांफ्रेंस, डीएमके, बीआरएस जैसी पार्टियों को वोट दीजिये लेकिन यदि आपको अपने परिवार के बच्चों का भला करना है तो वोट भाजपा को दीजिए।

****

बिहार से रिपु सिंह का प्रश्न :

सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को कैसे जनता तक पहुंचा सकते हैं। इसके जवाब में मोदी ने कहा हमारा लक्ष्य किसी एक योजना का लाभ देना नहीं है। शत प्रतिशत योजनाएं देना है। पीएम आवास वालों को मुद्रा या अन्य योजना का लाभ मिल रहा है या नहीं। उसे ये लाभ दिलवाएं। बूथ कार्यकर्ता दायित्व समझकर यह काम करते हैं तो आपकी ताकत बनेगी। नमो एप सहित अन्य माध्यम से उन्हें जोड़ें।

उत्तराखंड की हिमानी वैष्णव का प्रश्न :

प्रधानमंत्री ने विपक्षी दलों पर हमला बोलते हुए कहा कि तुष्टिकरण की राजनीति ने देश का नुकसान किया है। कुछ लोग केवल अपने दल के लिए जीते हैं और अपने कल का ही भला करना चाहते। वह यह सब इसलिए करते हैं क्योंकि उन्हें भ्रष्टाचार का कमीशन, मलाई खाने कट मनी का हिस्सा मिलता है। उन्होंने जो रास्ता चुना

दुनिया में भारत को ब्राइट स्पाट की तरह देखा जा रहा : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने भोपाल, मध्य प्रदेश में 'मेरा बूथ, सबसे मजबूत' कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर आयोजित विराट कार्यक्रम में आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का स्वागत एवं अभिनंदन किया इस अवसर पर उन्होंने कहा कि –

- जब पार्टी की बात आती है, तो आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कभी भी हमें समय देने से मना नहीं करते। शासनिक एवं प्रशासनिक कार्यों में व्यस्त रहने के बावजूद जब भी पार्टी को जरूरत होती है, आदरणीय प्रधानमंत्री जी पार्टी के कार्यक्रम में उपस्थित होकर मार्गदर्शन देते हैं।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी वे कुशल प्रशासक के साथ–साथ एक बहुत ही अच्छे संगठक भी हैं। उनकी कार्य पद्धति और मूल में संगठन रचा–बसा है। वे दिन–रात सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के लिए समर्पित रहते हैं।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोद जी ने ही अल्पकालिक विस्तारक योजना का विचार पार्टी के संसदीय कार्य समिति की बैठक में रखा था। उन्हीं के सुझावों पर अमल करते हुए भारतीय जनता पार्टी ने "मेरा बूथ, सबसे मजबूत" कार्यक्रम शुरू किया।
- आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने सुझाव दिया था कि कमजोर बूथ को मजबूत करने की जरूरत है। इसलिए पार्टी ने 100 लोकसभा और 50 विधानसभा का चयन किया जहाँ ये विस्तारक संगठन की मजबूती के लिए काम करेंगे।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सुझाव पर अमल करते हुए भारतीय जनता पार्टी ने "Know BJP" कार्यक्रम शुरू किया। इस कार्यक्रम के तहत अब तक दुनिया के दो प्रधानमंत्री, चार विदेश मंत्री और 60 राजदूत भारतीय जनता पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय आये हैं और उन्होंने भाजपा को समझा है।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत और भारतीय

है, उसमें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती और यह रास्ता है तुष्टिकरण और वोट बैंक का। गरीब को गरीब बनाए रखने, वंचित को वंचित बनाए रखने से उनकी राजनीति चलती है। तुष्टिकरण का यह रास्ता कुछ लाभ दे सकता है लेकिन यह देश के लिए महाविनाशक होता है।
यह देश के विकास को रोक देता है। देश में तबाही लाता है और विभेद पैदा करता है। समाज में दीवार खड़ी करता है। एक तरफ इस तरह के लोग जो तुष्टिकरण करके अपने स्वार्थ के लिए दूसरों के विरुद्ध खड़े कर देते हैं। हमारे संकल्प बड़े हैं और हम हमारी प्राथमिकता से पहले देश को रखते हैं, इसलिए भाजपा ने यह निर्धारित किया है कि हमें तुष्टिकरण के रास्ते पर नहीं चलना है। वोट बैंक के रास्ते पर नहीं चलना है। हमारा रास्ता तुष्टिकरण नहीं संतुष्टिकरण का है। देश में जहां भाजपा सरकार है वहां हम संतुष्टिकरण के अभियान में लगे हैं। संतुष्टिकरण का रास्ता मेहनत वाला होता है। उसमें पसीना बहाना पड़ता है। अगर बिजली मिलेगी तो सबको मिलेगी, तब लोग संतुष्ट होंगे। नल से जल का अभियान चलेगा तो हर घर तक जल पहुंचाने का प्रयास होगा। इसमें किसी के साथ भेदभाव नहीं होगा। हमने देखा है कि कैसे तुष्टिकरण वाली गंदी सोच ने कुछ राज्यों ने लोगों के बीच खाई पैदा कर दी। उत्तर प्रदेश में कोरी, खटीक सहित कई समाज के लोग राजनीति के शिकार हुए और विकास से वंचित रह गए। बिहार, केरल, तेलंगाना, कर्नाटक सहित राज्यों में भेदभाव हुआ है। हमारे घुमंतु वर्ग के लोगों को सरकारी योजनाओं से वंचित रखा गया। हमने पहली बार सबके लिए बैंकों के दरवाजे खोल दिए। पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से बैंक से कम ब्याज पर पैसे दिलाने का काम किया। सामाजिक न्याय के नाम पर वोट मांगने वालों ने गांव और गरीब के साथ सबसे अधिक अन्याय किया है।भाजपा सरकार ने हमारे बंजारा भाई बहनों घुमंतु समुदाय के लिए गठित किया ओबीसी कमिशन को संवैधानिक दर्जा देने का काम किया।

उप्र की रानी का तीन तलाक पर प्रश्न :

एक प्रश्न के उत्तर में मोदी ने कहा कि मुझे लगता है कि जो भी तीन तलाक के पक्ष में बातें करते हैं, वकालत करते हैं। यह वोट बैंक के भूखे लोग मुस्लिम बेटियों के साथ बहुत बड़ा अन्याय करते हैं। तीन तलाक का नुकसान सिर्फ बेटियों को नहीं उसका दायरा बहुत बड़ा होता है। पिता, भाई सब बेटी की चिंता में दुखी हो जाते हैं। पूरा परिवार तबाह हो जाता है। दुनिया के कई मुस्लिम बहुल देश में भी तीन तलाक बंद कर दिया है। इजिप्ट में 90 वर्ष पहले इस प्रथा को समाप्त कर दिया है। यह इस्लाम का अंग है तो पाकिस्तान और इंडोनेशिया में क्यों नहीं होता।

जनता पार्टी को दुनिया में नयी उंचाई पर स्थापित किया है। दुनिया में उन्हें सम्मान मिलना, प्रत्येक देशवासी को गौरवान्वित करता है।

- आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी देश के पहले प्रधानमंत्री हैं, जिन्हें अमेरिकी कांग्रेस के संयुक्त सभा को दो बार संबोधित करने का सम्मान मिला है। अमेरिकी कांग्रेस के सांसदों ने उनके संबोधन में बारंबार उठकर हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी को सम्मान दिया।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की राजकीय यात्रा के दौरान अमेरिका और भारत के बीच हुए समझौतों से दोनों देशों के संबंध एक नई उंचाई पर पहुंचे हैं।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को मिस्र में वहां के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "आर्डर ऑफ द नाइल" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भारत के बारे दुनिया के लोग की सोच को दर्शाता है।
- जब अमेरिका में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी दुनिया की बड़ी–बड़ी कंपनियों के सीईओ से मिले, तब किसी ने उनके बारे में कहा कि आई एम यूओर फैन, किसी ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी जी बदलाव के नेता हैं।
- ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री कहते हैं – मोदी इज द बॉस। पापुआ न्यू गिनी के राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री जी के पाँव छूकर अभिवादन करते हैं। न्यूजीलैंड के प्रधानमंत्री ऑस्ट्रेलिया के सिडनी आकर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात करते हैं। यह दर्शाता है कि दुनिया में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की छवि किस उंचाई पर पहुंच गई है।
- आज दुनिया में भारत को ब्राइट स्पॉट की तरह देखा जा रहा है। दुनिया को भारत की अर्थव्यवस्था में आशा की किरणें देखने को मिल रही है। सारी अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक रेटिंग एजेंसियां मानती हैं कि भारत दुनिया की सबसे मजबूत अर्थव्यवस्था है।
- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के मजबूत इरादों, बेहतरीन नीतियों और उसके सही क्रियान्वयन की वजह से भारत की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हुई है। उनकी गरीब कल्याण नीतियों के बल पर आज भारत की गरीबी 22% से घट कर 10% के नीचे आ गई है। साथ ही, अति गरीबी की दर भी 1% से भी कम है।
- सभी अल्पकालिक विस्तारक उमंग से भरे हुए हैं। आपलोग बूथों पर जाकर काम करें। वहां आपको कई बातें सीखने का अवसर मिलेगा और आप पार्टी को मजबूत करने के लिए काम करेंगे। मैं सभी अल्पकालिक विस्तारकों को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

भारत के मुसलमान भाई– बहनों को समझना होगा कि कौन से दल उन्हें भड़काकर उनका लाभ ले रहे हैं। समान सिवल कोड का विरोध कर रहे हैं। भारत के संविधान में भी नागरिकों के समान अधिकार की बात कही की गई है। कई लोग मुसलमान–मुसलमान करते हैं। यह लोग सही में उनके हितैषी होते तो मुस्लिम भाई शिक्षा में पीछे नहीं रहते।

जो भी तीन तलाक के पक्ष में बात करते हैं, जो भी इसकी वकालत करते हैं... वो वोट बैंक के भूखे लोग मुस्लिम बेटियों के साथ बहुत बड़ा अन्याय कर रहे हैं। तीन तलाक से केवल बेटियों पर अन्याय नहीं होता...पूरे परिवार तबाह हो जाते हैं। अगर तीन तलाक इस्लाम का जरूरी अंग है तो कतर, जॉर्डन, इंडोनेशिया जैसे देशों में क्यों इसको बंद कर दिया। भारत के मुसलमान भाई बहनों को ये समझना होगा कि कौन से राजनीतिक दल उनको भड़का कर उनका राजनीतिक फायदा ले रहे हैं। हम देख रहे हैं कि यूनिफॉर्म सिविल कोड के नाम पर ऐसे लोगों को भड़काने का काम हो रहा है। एक घर में एक सदस्य के लिए एक कानून हो और दूसरे के लिए दूसरा तो घर चल पायेगा क्या? तो ऐसी दोहरी व्यवस्था से देश कैसे चल पाएगा। कोई गरीब ये नहीं चाहता कि उसके बच्चों के नसीब में भी गरीबी रहे। परिवार के नाम पर वोट मांगने वालों ने अपने परिवार का ही भला किया। अब आपको सोच समझ कर यह तय करना है कि आप किसका भला होते देखना चाहते हैं।

भाजपा की सरकार बनाने का मन बना लिया

प्रधानमंत्री ने गुजरात की हेतल बेनजानी के प्रश्न के उत्तर में कहा कि एक दूसरे के विरुद्ध लड़ने वाली पार्टियां भी एक हो रही हैं। ऐसे लोगों पर गुस्सा नहीं, दया कीजिए। हमने 2014 और 2019 के चुनाव देखा है। दोनों में चुनावों में इन दलों में इतनी छटपटाहट नहीं दिखी जितनी आज दिख रही है। जिन्हें लोग पहले अपना दुश्मन बताते थे, उन्हें साष्टांग प्रणाम कर रहे हैं। उनकी घबराहट से साफ है कि जनता ने 2024 में भाजपा की सरकार बनाने का मन बना लिया है। इसी कारण विपक्षी दल बौखलाएं हैं। उन्हें तय किया है कि जनता बरगलाकर, गुमराह कर सत्ता हासिल कर लेंगे। आज नया शब्द आ रहा गारंटी। यह गारंटी है घोटालों की। कांग्रेस का घोटाला ही अकेले लाखों करोड़ों का है।

भ्रष्टाचार घोटालों वाले दलों का गठजोड़

आरजेडी पर हजारों करोड़ का आरोप हैं। चारा घोटाला, अलकतरा घोटाला, पशुपालन घोटाला, बाढ़ राहत घोटाला। इनके घोटालों की इतनी लंबी सूची है कि अदालतें भी थक गईं। तमिलनाडु में देखिए डीएमके पर अवैध तरीके से सवा लाख करोड़ की संपत्ति बनाने का आरोप। बीएमसी पर भी 23 हजार करोड़ रुपये से अधिक के घोटाले का आरोप। रोज वैली घोटाला, शारदा घोटाला, शिक्षक भर्ती घोटाला, गौ तस्करी घोटाला और कोयला घोटाला, बंगाल के लोग कभी भूल नहीं सकते हैं। एनसीपी अभी लगभग 70 हजार करोड़ रुपये के घोटाले का आरोप हैं।

अब देश को तय करना है कि घोटालों की गारंटी को देश स्वीकार करेगा। हर चोर लुटेरे पर कार्रवाई की गारंटी। जिसने देश को लूटा है, उसका हिसाब तो होकर रहेगा। आज कानून का डंडा चल रहा है। जेल की सलाख सामने दिख रही हैं तब जाकर यह जुगलबंदी हो रही है। इनका कामन मिनिमम प्रोग्राम कार्रवाई से बचना ही है। लोग जागरूक हैं। वह देख रहे हैं यह विपक्षी गठबंधन के पीछे किसकी क्या मंशा है। घोटालों की गारंटी ही उनका इतिहास है। कोई जेल की सजा काटकर घर–गांव वापस आता है, तो लोगों का क्या रवैया रहता है। बूथ स्तर के कार्यकर्ता इस बात को गांव–गांव तक पहुंचाएंगे। लोगों को इनकी वास्तविकता का पता चल ही जाएगा, वह सब देख रहे हैं। इस विपक्षी एकता के प्रयास के पीछे सभी दलों की क्या मंशा है। उन दलों की असली पहचान बीस लाख करोड़ रुपये के घोटाले की गारंटी। यही उनका इतिहास है।

आप देखिए कि कई लोग जमानत पर चल रहा हैं। घोटालों के आरोपी हैं, जिनके ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप हैं। ऐसे लोग उन लोगों से जाकर मिल रहे हैं जो सजा काट रहे हैं या जेल में से अनुभव लेकर के आए हैं। कोई गरीबी नहीं चाहता कि उसके बच्चों के नसीब में भी गरीबी रहे। हमें लोगों को यह बताना होगा कि उन्होंने अपने बच्चों का भविष्य सुधारने के लिए जिनको वोट दिया, उसका क्या परिणाम हुआ। परिवार के नाम पर वोट मांगने वालों ने अपने परिवार का भला किया। आपको सोच समझकर तय करना है कि आप किसका

भाजपा की सबसे बड़ी ताकत आप सभी कार्यकर्ता हैं। आप सिर्फ दल ही नहीं, देश के संकल्पों की सिद्धि के भी सिपाही हैं। भाजपा के हर कार्यकर्ता के लिए देशहित सर्वोपरि है, दल से बड़ा देश है। जब देश का भला होगा, तो सबका भला होगा। जब सबका भला होगा, तो देश आगे बढ़ेगा।

****

सीट चाहे कोई भी हो, उम्मीदवार चाहे कोई भी हो, हमारा उम्मीदवार एक ही है और वह उम्मीदवार है कमल। कमल से बड़ा कुछ नहीं है। हमारे लिए कमल ही सब कुछ है। जहां कमल है, वहीं पर समस्याओं का हल भी है।

****

भला होता देखना चाहते हैं। अगर गांधी परिवार का भला चाहते हो तो फिर कांग्रेस को वोट दीजिए। आपको मुलायम सिंह के बेटे का भला करना है तो फिर समाजवादी पार्टी को वोट दीजिए। अगर आप लालू परिवार के बेटे–बेटियों का भला करना चाहते हों तो आरजेडी को वोट दीजिए। मेरे देशवासियों मेरी बात ध्यान से सुनिएगा, अपने बेटे–बेटी, पोते–पोती और अपने परिवार के बच्चों का भला करना है तो वोट भाजपा को दीजिए।

राजस्थान के रचित ने पूछा बचत योजनाओं का प्रचार कैसे करें

मोदी ने कहा कोरोना के बाद दुनिया के कई देशों में महंगाई ने रिकॉर्ड तोड़ दी है पाकिस्तान में 38% से अधिक महंगाई श्रीलंका में 25% से अधिक बांग्लादेश में 10 परसेंट के आसपास भारत में 5% से भी कम। यानी कोरोना के बावजूद भारत में हमने महंगाई को बेकाबू नहीं होने दिया भाजपा सरकार का जोर दो लोगों को बचत कराने पर है। भारतीय हर महीने 20 जीबी डाटा इस्माल कहता है। 2014 के हिसाब से देखते तो इतने डाटा का बिल ₹6000 महीना होता पर भाजपा सरकार ने डाटा को गरीब के लिए बिल्कुल संस्था कर दिया है आज 20 बीपी डाटा के लिए मुश्किल से ₹200 ₹300 देना पड़ता है आपका ₹5000 महीना बच रहा है।

हमने देखा है कि कैसे तुष्टिकरण वाली गंदी सोच ने कुछ राज्यों में लोगों के बीच में खाई पैदा कर दी। कई जातियां तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों की तुच्छ राजनीति के शिकार हुई और विकास से वंचित रह गई।

****

देश का भला करने का रास्ता तुष्टिकरण नहीं है, तुष्टिकरण नहीं है, तुष्टिकरण नहीं है। सही रास्ता है संतुष्टिकरण, संतुष्टिकरण, संतुष्टिकरण।

****

हमारा एक ही उम्मीदवार है कमल : मोदी

मोदी ने एकजुटता का संदेश देते हुए कहा कि उम्मीदवार कोई भी हो हमारा उम्मीदवार एक ही है। वह है कमल। जनता को यह भी लगे कि जहां कमल है वहीं उनकी भलाई है। हमें कमल के निशान को हर कार्यक्रम में प्राथमिकता मिले। मेरा बूथ सबसे मजबूत अभियान किसी तपस्या से कम नहीं है। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार ने दो लाख करोड़ रुपये कर्ज लिया, जिससे किसान को सस्ती खाद मिल सके। श्री अन्न को बढ़ावा देने के लिए भाजपा कार्यकर्ता ने हर संभव प्रयास करें। भारत नौवें नंबर से पांचवे नंबर की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। आज हमारी फैक्ट्रियां रिकार्ड उत्पादन करते हैं तो युवाओं का भविष्य बेहतर होता है। भाजपा एक तरफ देश के संसाधन बढ़ाने की नीति पर चलती है। जो पहले वंचित था वह आज लाभार्थी है। एक घंटा 55 मिनट तक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यकर्ताओं से किया संवाद।

भाजपा के राष्ट्री य अध्यक्ष जेपी नडडा ने कहा मोदी के मार्गदर्शन के पश्चात अल्पकालीन विस्तारक स्थान पर जाकर के काम करने वाले सबसे पहले तो मैं अपनी ओर से हमारे सभी अल्पकालीन विस्तारक जो निकल रहे हैं उनकी ओर से और इलेक्ट्रानिक माध्यम से जुड़े हैं उन सबकी ओर से आदरणीय प्रधानमंत्री जी का हार्दिक अभिनंदन करता हूं स्वागत करता हूं।

हमारे प्रधानमंत्री एक कुशल प्रशासक भी है तो सही रूप से संगठन के संगठन उनके मूल में उनके कार्य पद्धति में संगठन रचा बसा है उन्होंने अपना जीवन संगठन में छपा दिया और बूथ स्तर से काम का देख को देखते हुए उन्होंने देश का नेतृत्व किया और पार्टी को और देश को दुनिया के नक्शे पर खड़ा करने का काम किया तो आदरणीय मोदी जी हम सब लोगों को समय मिलना और विशेष करके उनका मार्गदर्शन मिलना यह हम सबके लिए प्रफुल्लित करने वाला भी शादी है पौराणिक करने वाला भी है और हम लोगों को इसमें से जो संस्कार मिलते हैं उसको अपने में समाहित करने का भी अवसर है इसलिए मैं पुणे प्रधानमंत्री जी को हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

इसी विचार में से और अन्य प्रधानमंत्री जी दिन–रात प्रशासन के कामों में व्यस्त थे लेकिन उन्होंने पार्टी में पूछा कि यह सेवा सुशासन और गरीब कल्याण का कार्य कैसा चल रहा है हम लोगों ने उनको बताया कि हमारे यहां क्या–क्या कार्यक्रम इसके तहत चल रहे हैं और उसी में उन्होंने कहा कि मुझे लगता है कि अल्पकालीन विस्तारक को को निकालना चाहिए और राज्यों में उनको भेजना चाहिए और पार्टी ने इस कार्यक्रम को अपने हाथ में लिया मेरा बूथ सबसे मजबूत इस बात को लेकर आज एक चयनित प्रक्रिया से 2639 49 कार्यकर्ता देश भर से यहां आए और वह 1 सप्ताह के लिए हमारे राज्यों में जाकर दूध के सशक्तीकरण के लिए काम करेंगे इस योजना का भी सूत्रपात किसी ने किया तो वह भी आदरणीय प्रधानमंत्री जी के विचार से निकला। 9 साल पहले भारत की अर्थव्यवस्था दसवें नंबर पर के आज 5 पर आ गई। भारत की गरीबी 22% से घटकर 10% से भी कम हो गई है। 50 करोड़ लोगों को हेल्थ कवर देना, आवास योजना किसान कल्याण निधि ऐसे सैकड़ों काम प्रधानमंत्री निधि आपके नेतृत्व में भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बनी।

"माताभूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः" एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य

भारत के लिए यह गौरव का क्षण था, जब भारतीय प्रधान मंत्री, अमेरिकी कांग्रेस के प्रतिनिधियों को सम्बोधित कर रहे थे, तालियों की गड़गड़ाहट एवं सदस्यों द्वारा जब खड़े होकर प्रधानमंत्री के उद्बोधन का समर्थन कर रहे थे तो 140 करोड़ भारतीयों की सिर गर्व से ऊँचा हो रहा था। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने कहा कि अमेरिकी कांग्रेस को संबोधित करना हमेशा एक बड़ा सम्मान होता है। ऐसा अवसर दो बार प्राप्त करना एक असाधारण विशेषाधिकार है। इस सम्मान के लिए भारत की 1.4 अरब जनता की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं। मैं देख रहा हूं कि आप में से लगभग आधे लोग 2016 में यहां थे। मैं पुराने मित्रों के तौर पर आपके उत्साहपूर्ण भाव को महसूस करता हूं। बाकी सभी के बीच भी मैं एक नई मित्रता का उत्साह महसूस कर सकता हूं। मुझे सीनेटर हैरी रीड, सीनेटर जॉन मैक्केन, सीनेटर ओरिन हैच, एलिजा कमिंग्स, एलसी हेस्टिंग्स और अन्य लोगों का स्मरण हैं, जिनसे मेरी 2016 में यहां भेंट हुई थी, पर यह दुख की बात है कि अब वे हमारे साथ नहीं हैं।

यहां खड़े होकर, सात वर्ष पहले, यही वह जून है जब हैमिल्टन ने सभी पुरस्कार जीते थे, मैंने कहा था कि इतिहास की दुविधा हमारे साथ थी। अब, जब हमारा युग एक मिलनस्थल पर है, मैं इस शताब्दी के लिए हमारे आह्वान के संदर्भ में चर्चा करने के लिए यहां उपस्थित हूं। जिस लंबे और वक्र मार्ग पर हमने यात्रा की है, उसमें मित्रता की कसौटी पर हम खरे उतरे हैं। सात वर्ष पहले जब मैं यहां आया था तब से बहुत कुछ बदल गया है। लेकिन बहुत कुछ समान भी है– जैसे भारत और अमेरिका के बीच की मित्रता को परिपुष्ट करने की हमारी प्रतिबद्धता। पिछले कुछ वर्षों में एआई–आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में काफी प्रगति हुई है। साथ ही, अन्य एआई– अमेरिका और भारत में और भी महत्वपूर्ण विकास हुए हैं।

लोकतंत्र की खूबसूरती लोगों से लगातार जुड़े रहने, उनकी बात सुनना और उनका मनोदशा को महसूस करना है। और, मैं जानता हूं कि इसमें लंबी यात्रा, बहुत समय, ऊर्जा और प्रयास लगता है। यह गुरुवार की दोपहर है– आप में से कुछ के लिए बेहद व्यस्थ दिन है।

इसलिए, मैं आपके समय के लिए आभारी हूं। मैं यह भी जानता हूं कि पिछले महीने आप कितने व्यस्त रहे हैं।

एक जीवंत लोकतंत्र का नागरिक होने के नाते, मैं एक बात स्वीकार कर सकता हूं अध्यक्ष महोदय– आपका काम कठिन है! उत्साह, प्रतिपालन और नीति के संघर्षों में इस कार्य को जोड़कर देख सकता हूं। मैं विचारों और विचारधारा के तर्क–वितर्क को समझ सकता हूं लेकिन मुझे यह देखकर प्रसन्नता हो रही है कि आज आप विश्व के दो महान लोकतंत्रों– भारत और अमेरिका के बीच संबंधों का महोत्सव मनाने के लिए एक साथ उपस्थित हैं। जब भी आपको पुष्ट द्विदलीय सहमति की आवश्यकता हो तो मुझे सहायता करने में प्रसन्नता का अनुभव होगा। स्वदेश में विचारों का एक मंथन होगा– और होना भी चाहिए।

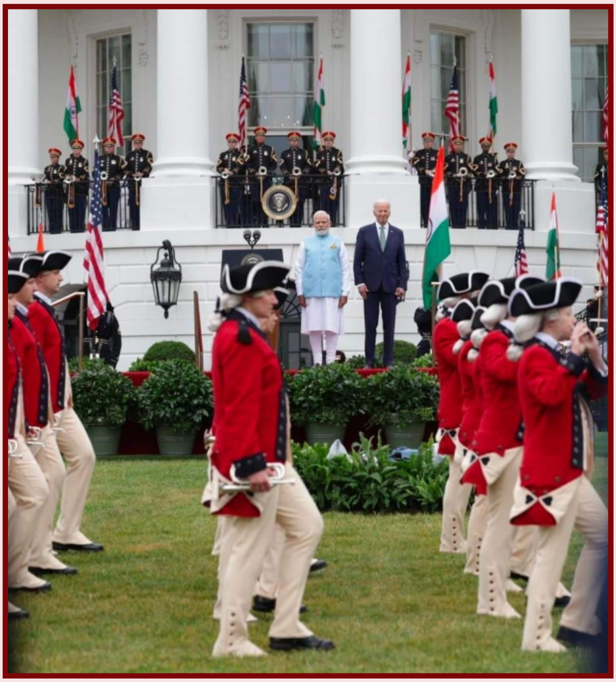

लेकिन, जब हम अपने राष्ट्र की बात करते हैं तो हमें एक साथ आना भी चाहिए। और, आपने दिखाया है कि आप यह कर सकते हैं। इसके लिए बधाई स्वीकार करें!

अमेरिका की स्थापना समान लोगों वाले राष्ट्र की अवधारणा से प्रेरित थी। अपने पूरे इतिहास में, आपने दुनिया भर के लोगों को गले लगाया है। और, आपने उन्हें अमेरिकी स्वप्न में बराबर का भागीदार बनाया है। यहां लाखों लोग हैं, जिनकी जड़ें भारत में हैं। उनमें से कुछ इस कक्ष में शान से बैठते हैं। मेरे पीछे भी एक हैं, जिन्होंने इतिहास रचा है! मुझे जानकारी दी गयी है कि समोसा कॉकस की अब सदन में अहम भूमिका है। मुझे आशा है कि इसमें और बढ़ोत्तरी होगी और भारतीय पाक शैली की पूर्ण विविधता यहां लाई जाएगी। दो शताब्दियों से अधिक समय से, हमने महान अमेरिकियों और भारतीयों की जीवनशैली से एक–दूसरे को प्रेरित किया है। हम महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर को श्रद्धांजलि देते हैं। हम कई अन्य लोगों को भी याद करते हैं जिन्होंने स्वतंत्रता, समानता और न्याय के लिए कार्य किया। आज, उनमें से एक– कांग्रेस के सदस्य जॉन लुईस को भी मैं भावभीनी श्रद्धांजलि देना चाहता हूं।

लोकतंत्र हमारे पवित्र और साझा मूल्यों में से एक है। यह लंबे समय में विकसित हुआ है, और इसने विभिन्न रूप और व्यवस्थाओं को अपनाया हैं। हालाँकि, पूरे इतिहास में, एक बात स्पष्ट रही है।

लोकतंत्र वह भावना है जो समानता और सम्मान का समर्थन करती है।

लोकतंत्र वह विचार है जो परिचर्चा और संवाद का स्वागत करता है। लोकतंत्र वह संस्कृति है जो विचार और अभिव्यक्ति को पंख देती है। भारत को अनादिकाल से ऐसे मूल्यों का सौभाग्य प्राप्त है। लोकतांत्रिक भावना के विकास में भारत लोकतंत्र की जननी है। सहस्राब्दियों पहले, हमारे सबसे पुराने धर्मग्रंथों में कहा गया था, ''एकम् सत् विप्रा बहुधा वदन्ति''। इसका अर्थ है– सत्य एक है लेकिन बौद्धिक लोग उसे अलग–अलग तरीकों से व्यक्त करते हैं। अब, अमेरिका सबसे पुराना और भारत सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हमारी साझेदारी लोकतंत्र के भविष्य के लिए शुभ संकेत है। हम सब मिलकर दुनिया को बेहतर भविष्य देंगे और भविष्य को बेहतर दुनिया देंगे।

पिछले वर्ष भारत ने अपनी आजादी के 75 साल पूरे किये। प्रत्येक मील का पत्थर महत्वपूर्ण है, लेकिन यह विशेष था। हमने किसी न किसी रूप में एक हजार वर्षों के विदेशी शासन के बाद, आजादी की 75 वर्षों से अधिक की उल्लेखनीय यात्रा का महोत्सव मनाया। यह सिर्फ लोकतंत्र का ही नहीं बल्कि विविधता, संविधान, उसकी सामाजिक सशक्तिकरण की भावना के साथ–साथ न केवल हमारे प्रतिस्पर्धी और सहकारी संघवाद का बल्कि हमारी आवश्यक एकता और अखंडता का भी उत्सव था।

हमारे पास दो हजार पांच सौ से अधिक राजनीतिक दल हैं। हाँ, आपने सही सुना– दो हजार पाँच सौ। भारत के विभिन्न राज्यों में लगभग बीस अलग–अलग पार्टियाँ शासन करती हैं। हमारी बाईस आधिकारिक भाषाएँ और हजारों बोलियाँ हैं, और फिर भी, हम एक स्वर में बात

करते हैं। हर सौ मील पर हमारा भोजन बदल जाता है। डोसा से लेकर आलू पराठा तक और श्रीखंड से लेकर संदेश तक, हम इन सबका आनंद लेते हैं। हम दुनिया के सभी धर्मों का घर हैं, और हम उन सभी का उत्सव भी मनाते हैं। भारत में विविधता जीवन जीने का एक स्वाभाविक तरीका है।

आज दुनिया भारत के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानना चाहती है। मैं इस सदन में भी वह जिज्ञासा देखता हूं। पिछले दशक में भारत में अमेरिकी कांग्रेस के सौ से अधिक सदस्यों का स्वागत करके हम सम्मानित महसूस कर रहे हैं। हर कोई भारत के विकास, लोकतंत्र और विविधता को समझना चाहता है। हर कोई जानना चाहता है कि भारत क्या सही कर रहा है और कैसे। करीबी मित्रों के बीच, मुझे इसे साझा करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

जब मैंने प्रधानमंत्री के रूप में पहली बार अमेरिका का दौरा किया, तो भारत दुनिया की दसवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। आज भारत पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और भारत जल्द ही तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगा। हम न केवल विकसित हो रहे हैं बल्कि तेजी से बढ़ भी रहे हैं। जब भारत बढ़ता है तो पूरी दुनिया बढ़ती है। आखिरकार, हम दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा हैं! पिछली शताब्दी में, जब भारत ने अपनी स्वतंत्रता हासिल की, तो इसने कई अन्य देशों को औपनिवेशिक शासन से खुद को मुक्त करने के लिए प्रेरित किया। इस सदी में, जब भारत विकास के मानक स्थापित करेगा, तो यह कई अन्य देशों को भी ऐसा करने के लिए प्रेरित करेगा। हमारा दृष्टिकोण सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास है। इसका अभिप्राय है, सबका विकास, सबके विश्वास और सबके प्रयासों से साथ मिलकर आगे बढ़ना है।

आइए मैं आपके साथ साझा करता हूँ कि यह दृष्टिकोण गति और व्यापकता के साथ किस प्रकार से कार्यान्वित हो रहा है। हम बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हमने सवा सौ करोड़ से अधिक लोगों को आश्रय प्रदान करने के लिए लगभग चालीस मिलियन घर दिए हैं। यह ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या का लगभग छह गुना है! हम एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रम चलाते हैं जो लगभग पांच सौ मिलियन लोगों के लिए मुफ्त चिकित्सा उपचार सुनिश्चित करता है। यह दक्षिण अमेरिका की जनसंख्या से भी अधिक है! हमने दुनिया के सबसे बड़े वित्तीय समावेशन अभियान के साथ बैंकिंग को उन लोगों तक पहुंचाया जिनके पास बैंकिंग सुविधा नहीं थी। लगभग पाँच सौ मिलियन लोगों को इसका लाभ हुआ।

यह उत्तरी अमेरिका की जनसंख्या के करीब है! हमने डिजिटल इंडिया बनाने पर काम किया है. आज देश में आठ सौ पचास करोड़ से अधिक स्मार्ट फोन और इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं। यह यूरोप की जनसंख्या से भी अधिक है! हमने अपने लोगों को भारत में निर्मित कोविड टीकों की दो दशमलव दो अरब खुराकें देकर सुरक्षित किया, और वह भी निःशुल्क! हो सकता है कि जल्द ही

हम महाद्वीपों से भी आगे बढ़ जाएं, इसलिए मैं यहीं रुकूंना चाहूँगा!

वेद दुनिया के सबसे पुराने धर्मग्रंथों में से एक हैं। वे हजारों साल पहले रचित मानवता का एक महान खजाना हैं। उस समय, महिला ऋषियों ने वेदों में कई छंदों की रचना की और आज, आधुनिक भारत में, महिलाएं हमें बेहतर भविष्य की ओर ले जा रही हैं। भारत का दृष्टिकोण सिर्फ महिलाओं को लाभ पहुंचाने वाला विकास नहीं है। यह महिला नेतृत्व वाले विकास का है, जहां महिलाएं प्रगति की यात्रा का नेतृत्व करती हैं। एक साधारण जनजाति की पृष्ठभूमि से निकलकर एक महिला हमारी राष्ट्रपति बनी हैं।

लगभग एक दशमलव पाँच मिलियन निर्वाचित महिलाएँ विभिन्न स्तरों पर हमारा नेतृत्व करती हैं और वह है स्थानीय सरकारों के रूप में हैं। आज महिलाएं थल सेना, नौसेना और वायु सेना में हमारे देश की सेवा कर रही हैं। विश्व में महिला एयरलाइन पायलटों का प्रतिशत भी भारत में सबसे अधिक है। और, उन्होंने हमारे मंगल मिशन का नेतृत्व करके हमें मंगल ग्रह पर भी पहुंचाया है। मेरा मानना है कि एक बालिका के उत्थान पर निवेश करने से पूरे परिवार का उत्थान होता है। महिलाओं को सशक्तिकरण, राष्ट्र का सशक्तिकरण कर देता है।

भारत युवा आबादी वाला एक प्राचीन राष्ट्र है। भारत अपनी परंपराओं के लिए जाना जाता है। लेकिन युवा पीढ़ी इसे टेक्नोलॉजी का हब भी बना रही है। चाहे वह इंस्टा पर क्रिएटिव रील्स हो या रियल टाइम पेमेंट, कोडिंग या क्वांटम कंप्यूटिंग, मशीन लर्निंग या मोबाइल ऐप, फिनटेक या डेटा साइंस, भारत के युवा इस बात का एक बड़ा उदाहरण हैं कि एक समाज नवीनतम तकनीक को कैसे अपना सकता है। भारत में, प्रौद्योगिकी न केवल नवाचार से जुड़ी है बल्कि समावेशन के संबंध में भी है। आज डिजिटल प्लेटफॉर्म निजता की रक्षा करते हुए लोगों के अधिकारों और सम्मान को सशक्त बना रहे हैं।

पिछले नौ वर्षों में, एक अरब से अधिक लोगों को उनके बैंक खातों और मोबाइल फोन से जुड़ी एक अद्वितीय डिजिटल बायोमेट्रिक पहचान मिली है। यह डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा हमें वित्तीय सहायता के साथ नागरिकों तक सेकंडों में पहुंचने में मदद करता है। आठ सौ पचास मिलियन लोगों को उनके खातों में प्रत्यक्ष लाभ वित्तीय हस्तांतरण प्राप्त होता है। साल में तीन बार, एक बटन के क्लिक पर सौ मिलियन से अधिक किसानों को उनके बैंक खातों में सहायता प्राप्त होती है। ऐसे हस्तांतरणों का मूल्य तीन सौ बीस अरब डॉलर से अधिक हो गया है, और हमने इस प्रक्रिया में पच्चीस अरब डॉलर से अधिक की बचत की है। यदि आप भारत का दौरा करें, तो आप देखेंगे कि हर कोई भुगतान के लिए फोन का उपयोग कर रहा है, जिसमें एक सड़क विक्रेता भी शामिल हैं।

पिछले वर्ष दुनिया में हर 100 रियल टाइम डिजिटल भुगतान में से 46 भारत में हुए। लगभग चार लाख मील ऑप्टिकल फाइबर केबल और सस्ते डेटा ने अवसरों की क्रांति ला दी है। किसान मौसम संबंधी अपडेट देखते हैं, बुजुर्गों को सामाजिक सुरक्षा भुगतान मिलती है, छात्रों को छात्रवृत्ति मिलती है, डॉक्टर टेली–मेडिसिन देते हैं, मछुआरे मछली पकड़ने की संभावनाओं की मदद लेते हैं और छोटे व्यवसायों को अपने फोन पर सिर्फ एक टैप से ऋण मिलता है।

लोकतंत्र, समावेश और स्थिरता की भावना हमें परिभाषित करती है। यह दुनिया के प्रति हमारे दृष्टिकोण को भी आकार देता है। भारत अपनी पृथ्वी के प्रति जिम्मेदार रहते हुए आगे बढ़ता है।

हमें यकीन है: **माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः**

इसका अर्थ है– **''पृथ्वी हमारी माता है और हम उसकी संतान हैं।''**

भारतीय संस्कृति पर्यावरण और हमारे ग्रह का हृदय से सम्मान करती है। सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनते हुए, हमने अपनी सौर क्षमता में दो हजार तीन सौ प्रतिशत की वृद्धि की! हाँ, आपने सही सुना– दो हजार तीन सौ प्रतिशत!

हम अपनी पेरिस प्रतिबद्धता को पूरा करने वाले एकमात्र जी–20 देश बन गए हैं। हमने 2030 के लक्ष्य से नौ साल पहले, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को हमारे ऊर्जा स्रोतों का चालीस प्रतिशत से अधिक हिस्सा बना लिया। लेकिन हम यहीं नहीं रुके। ग्लासगो शिखर सम्मेलन में, मैंने पर्यावरण के लिए मिशन लाइफ–लाइफस्टाइल का प्रस्ताव रखा। यह स्थिरता को एक सच्चा जन आंदोलन

बनाने का एक तरीका है। इसे केवल सरकारों के काम पर ही न छोड़ें।

चुनाव करते समय सचेत रहकर प्रत्येक व्यक्ति सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। स्थिरता को एक जन आंदोलन बनाने से दुनिया को नेट जीरो लक्ष्य तक तेजी से पहुंचने में मदद मिलेगी। हमारा दृष्टिकोण ग्रह–समर्थक प्रगति है। हमारा दृष्टिकोण ग्रह समृद्धि समर्थक है। हमारा दृष्टिकोण ग्रह समर्थक लोगों का है।

हम वसुधैव कुटुंबकम या विश्व एक परिवार है के आदर्श वाक्य के साथ जीते हैं। दुनिया के साथ हमारा जुड़ाव हर किसी के लाभ के लिए है। **'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड'** दुनिया को स्वच्छ ऊर्जा से जोड़ने में हम सभी को शामिल करना चाहता है। **'वन अर्थ, वन हेल्थ'** पशुओं और पौधों सहित सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल लाने के लिए वैश्विक कार्रवाई का एक दृष्टिकोण है।

जब हम जी–20 की अध्यक्षता करते हैं तो इसकी थीम में भी यही भावना देखी जाती है – **'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य।'** हम योग के माध्यम से भी एकता की भावना को आगे बढ़ाते हैं। कल ही, पूरी दुनिया अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने के लिए एक साथ एक मंच पर आई। अभी पिछले हफ्ते, सभी देश शांति सैनिकों के सम्मान में एक स्मारक दीवार बनाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में हमारे प्रस्ताव में शामिल हुए।

और इस वर्ष, पूरी दुनिया सतत कृषि और पोषण को समान रूप से बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष मना रही है। कोविड के दौरान, हमने एक सौ पचास से अधिक देशों में टीके और दवाएं पहुंचाईं। हम आपदाओं के दौरान पहले प्रतिक्रियाकर्ता के रूप में दूसरों तक पहुंचते हैं, जैसा कि हम अपने लिए करते हैं। हम अपने मामूली संसाधनों को उन लोगों के साथ साझा करते हैं जिन्हें उनकी सबसे अधिक आवश्यकता है। हम क्षमताओं का निर्माण करते हैं, निर्भरता का नहीं।

जब मैं दुनिया के प्रति भारत के दृष्टिकोण के बारे में बात करता हूं, तो इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका एक विशेष स्थान रखता है। मैं जानता हूं कि हमारे संबंध आप सभी के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। कांग्रेस के प्रत्येक सदस्य की इसमें गहरी रुचि है। जब भारत में रक्षा और एयरोस्पेस बढ़ता है, तो वाशिंगटन, एरिजोना, जॉर्जिया, अलबामा, दक्षिण कैरोलिना और पेंसिल्वेनिया राज्यों में उद्योग बढ़ते हैं। जब अमेरिकी कंपनियां बढ़ती हैं, तो भारत में उनके अनुसंधान और विकास केंद्र भी फलते–फूलते हैं। जब भारतीय अधिक उड़ान भरते हैं, तो विमानों का एकमात्र ऑर्डर अमेरिका के चवालिस राज्यों में दस लाख से अधिक रोजगारों का सृजन करता है।

जब कोई अमेरिकी फोन निर्माता भारत में निवेश करता है, तो यह दोनों देशों में रोजगारों और अवसरों का एक संपूर्ण पारिस्थितिकी तंत्र बनाता है। जब भारत और अमेरिका सेमी–कंडक्टर और महत्वपूर्ण खनिजों पर एक साथ काम करते हैं, तो यह दुनिया को आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक विविध, लचीला और विश्वसनीय बनाने में मदद करता है। वास्तव में, अध्यक्ष महोदय, सदी की शुरुआत में हम रक्षा सहयोग में न्यून थे। अब, संयुक्त राज्य अमेरिका हमारे सबसे महत्वपूर्ण रक्षा भागीदारों में से एक बन गया है। आज भारत और अमेरिका अंतरिक्ष और समुद्र में, विज्ञान और सेमी–कंडक्टर में, स्टार्ट–अप और स्थिरता में, तकनीक और व्यापार में, खेती और वित्त में, कला और कृत्रिम बुद्धिमत्ता में, ऊर्जा और शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और मानवीय प्रयासों में एक साथ काम कर रहे हैं।

हम लगातार चलना जारी रह सकते हैं। लेकिन, इसे संक्षेप में कहने के लिए, मैं कहूंगा, हमारे सहयोग का दायरा अनंत है, हमारे तालमेल की क्षमता असीमित है, और, हमारे संबंधों में का जुड़ाव सहज है।

इन सबमें भारतीय अमेरिकियों ने बड़ी भूमिका निभाई है। वे सिर्फ स्पेलिंग बी में ही नहीं, बल्कि हर क्षेत्र में प्रतिभाशाली हैं। अपने दिल और दिमाग, प्रतिभा और कौशल तथा अमेरिका और भारत के प्रति अपने प्यार से उन्होंने हमें जोड़ा हैय उन्होंने दरवाजे खोल दिये हैंय उन्होंने हमारी साझेदारी की क्षमता दिखाई है।

अतीत के प्रत्येक भारतीय प्रधानमंत्री और अमेरिकी राष्ट्रपति ने हमारे संबंधों को आगे बढ़ाया है। लेकिन हमारी पीढ़ी को इसे नई ऊंचाइयों पर ले जाने का गौरव प्राप्त है। मैं राष्ट्रपति बाइडेन से सहमत हूं कि यह इस सदी की एक निर्णायक साझेदारी है। क्योंकि यह एक बड़े उद्देश्य की पूर्ति करती है। लोकतंत्र, जनसांख्यिकी और नियति हमें वह उद्देश्य देती है। वैश्वीकरण का एक परिणाम आपूर्ति शृंखलाओं का अति–संकेन्द्रण रहा है।

हम आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधता लाने, विकेंद्रीकरण और लोकतंत्रीकरण करने के लिए मिलकर काम करेंगे। प्रौद्योगिकी इक्कीसवीं सदी में सुरक्षा, समृद्धि और नेतृत्व का निर्धारण करेगी। इसीलिए हमारे दोनों देशों ने एक नई 'महत्वपूर्ण और उभरती प्रौद्योगिकियों के लिए पहल' की स्थापना की। हमारी ज्ञान साझेदारी मानवता की सेवा करेगी और जलवायु परिवर्तन, भूख और स्वास्थ्य की वैश्विक चुनौतियों का समाधान तलाशेगी।

पिछले कुछ वर्ष गंभीर विघटनकारी विकास के साक्षी रहे हैं। यूक्रेन संघर्ष के साथ, युद्ध यूरोप में लौट आया है। इससे क्षेत्र में भारी पीड़ा हो रही है। चूँकि इसमें प्रमुख शक्तियाँ शामिल हैं, परिणाम गंभीर होंगे। ग्लोबल साउथ

के देश विशेष रूप से प्रभावित हुए हैं। वैश्विक व्यवस्था संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांतों के सम्मान, विवादों के शांतिपूर्ण समाधान और संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के सम्मान पर आधारित है।

जैसा कि मैंने प्रत्यक्ष और सार्वजनिक रूप से कहा है, यह युद्ध का युग नहीं अपिकु लेकिन यह संवाद और कूटनीति में से एक का युग है। और, हम सभी को रक्तपात और मानवीय पीड़ा को रोकने के लिए वह सब करना चाहिए जो हम कर सकते हैं। अध्यक्ष महोदय, दबाव और टकराव के काले बादल इंडो पैसिफिक में अपनी छाया डाल रहे हैं। क्षेत्र की स्थिरता हमारी साझेदारी की मुख्य चिंताओं में से एक बन गई है।

हम एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी इंडो पैसिफिक का दृष्टिकोण साझा करते हैं, जो सुरक्षित समुद्रों से जुड़ा हो, अंतरराष्ट्रीय कानून द्वारा परिभाषित हो, प्रभुत्व से मुक्त हो और आसियान केंद्रीयता में स्थित हो। एक ऐसा क्षेत्र जहां सभी राष्ट्र, छोटे और बड़े, अपनी पसंद में स्वतंत्र और निडर हैं, जहां प्रगति ऋण के असंभव बोझ से नहीं दबती है, जहां रणनीतिक उद्देश्यों के लिए कनेक्टिविटी का लाभ नहीं उठाया जाता है, जहां सभी राष्ट्र साझा समृद्धि के उच्च भावना से ऊपर रहते हैं।

हमारा दृष्टिकोण रोकने या बहिष्कृत करने का नहीं, बल्कि शांति और समृद्धि का एक सहयोगी क्षेत्र बनाने का है। हम क्षेत्रीय संस्थानों और क्षेत्र के भीतर और बाहर के अपने भागीदारों के साथ काम करते हैं। इसमें से क्वाड क्षेत्र की भलाई की एक बड़ी शक्ति बनकर उभरा है।

9–11 के बाद के दो दशक से भी अधिक समय और मुंबई में 26–11 के एक दशक से भी अधिक समय के बाद भी कट्टरपंथ और आतंकवाद पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर खतरा बना हुआ है। आतंकवाद मानवता का दुश्मन है और इससे निपटने में कोई किंतु–परंतु नहीं हो सकता। हमें आतंक को प्रायोजित और फैलाने वाली ऐसी सभी ताकतों पर काबू पाना होगा।

हमें बहुपक्षवाद को पुनर्जीवित करना चाहिए और बेहतर संसाधनों और प्रतिनिधित्व के साथ बहुपक्षीय संस्थानों में सुधार करना चाहिए। यह शासन की हमारी सभी वैश्विक संस्थाओं, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र पर लागू होता है। जब दुनिया बदल गई है तो हमारी संस्थाएं भी बदलनी चाहिए अथवा नियमों के बिना प्रतिद्वंद्विता की दुनिया द्वारा प्रतिस्थापित होने का जोखिम रहता है। अंतर्राष्ट्रीय कानून पर आधारित एक नई विश्व व्यवस्था के लिए काम करने में, हमारे दोनों देश भागीदार के रूप में सबसे आगे रहेंगे।

आज, हम अपने संबंधों की एक नई सुबह में एक साथ हैं जो न केवल हमारे दोनों देशों, बल्कि दुनिया के भाग्य को भी आकार देगा। जैसा कि युवा अमेरिकी कवि अमांडा गोर्मन ने व्यक्त किया है। 'जब दिन निकलता है तो हम अंधेरे से बाहर निकलते हैं, प्रज्वलित और निडर, जैसे ही हम इससे मुक्त होते हैं, नई सुबह खिलती है। क्योंकि वहाँ सदैव प्रकाश है, काश हम इसे महसूस करने के लिए पर्याप्त साहस रखते।"

हमारी विश्वसनीय साझेदारी इस नई सुबह में सूर्य की तरह है जो चारों ओर प्रकाश फैलाएगी।

मुझे अपनी लिखी हुई एक कविता याद आती है–

आसमान में सिर उठाकर
घने बादलों को चीरकर
रोशनी का संकल्प लें
अभी तो सूरज उगा है।
दृढ़ निश्चय के साथ चलकर
हर मुश्किल को पार कर
घोर अंधेरे को मिटाने
अभी तो सूरज उगा है।।

हम अलग–अलग परिस्थितियों और इतिहास से आते हैं, लेकिन हम एक समान दृष्टिकोण और एक समान नियति से से एकजुट हैं। जब हमारी साझेदारी आगे बढ़ती है, आर्थिक लचीलापन बढ़ता है, नवाचार बढ़ता है, विज्ञान फलता–फूलता है, ज्ञान आगे बढ़ता है, मानवता को लाभ होता है, हमारे समुद्र और आसमान सुरक्षित होते हैं इससे लोकतंत्र उज्जवल होगा और दुनिया एक बेहतर जगह होगी।

यही हमारी साझेदारी का मिशन है। इस सदी के लिए यही हमारा आह्वान है। अध्यक्ष महोदय और विशिष्ट सदस्यों, हमारी साझेदारी के उच्च मानकों के हिसाब से भी, यह यात्रा एक महान सकारात्मक परिवर्तन में से एक है। साथ मिलकर, हम यह प्रदर्शित करेंगे कि लोकतंत्र मायने रखता है और लोकतंत्र परिणाम देता है। मैं भारत–अमेरिका साझेदारी के लिए आपके निरंतर समर्थन पर भरोसा करता हूं।

जब मैं 2016 में यहां आया था, तो मैंने कहा था कि 'हमारा रिश्ता एक महत्वपूर्ण भविष्य के लिए तैयार है'। वह भविष्य आज है। इस सम्मान के लिए एक बार फिर अध्यक्ष महोदय, उपराष्ट्रपति महोदया और विशिष्ट सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ।

ईश्वर अमेरिका को अपना आशीर्वाद दें।
जय हिन्द। भारत–अमेरिका मित्रता जिंदाबाद।

हवा में है विपक्ष का महागठबंधन

न सर्वमान्य नेता और न ही नीति, वंशवाद-परिवारवाद को बचाने की कवायद...

भारतीय राजनीति में शुचिता के साथ सबका साथ –सबका विकास के जनप्रिय नारे के साथ केंद्र में चल रही मोदी सरकार लगातार उन्नति के शिखर पर है। देश–विदेश में मोदी सरकार के कामकाज की न केवल सराहना हो रही है बल्कि एक देश के प्रधानमंत्री ने तो श्रद्धावनत होकर चरण रज भी ले ली लेकिन यह सब देश के उन विरोधी राजनीतिक दलों को नहीं भा रही है, जिन्होंने देश की जनता के पैसे न केवल अपनी पैतृक संपत्तियां बढ़ाई बल्कि परिवारवाद और वंशवाद की बेल को खाद–पानी दिया और मोदी सरकार की राष्ट्रहितैषी नीतियों के कारण इनके भ्रष्टाचारी महलों की दीवारें दरकने लगी हैं।

बिहार की राजधानी पटना में गत २३ जनवरी २०२३ को प्रधानमंत्री की कुर्सी पर टकटकी लगाए बैठे ऐसे ही वंशवादी–परिवादी राजनेताओं ने तथाकथित एकजुटता दिखाते हुए बैठक की और उद्देश्य घोषित किया केंद्र सरकार से मोदी सरकार की विदाई लेकिन अपने–अपने राज्यों के इन सामंतवादी राजनेता मात्र तीन घंटे की बैठक में ही न केवल आपस में टकराए बल्कि दिल्ली और पंजाब में सरकार चलाने वाली आप पार्टी के संयोजक और दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल अपने समर्थकों को लेकर पटना से चल दिए और मीडिया के समक्ष अपनी एकजुटता दिखाने के लिए बैठे नेताओं की नजरें अरविंद केजरीवाल एंड टीम को तलाशती रहीं। ऐसे हालात ऐसे बने कि बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव को मीडिया के सवालों का जवाब तक देते नहीं बना। अरविंद केजरीवाल और कांग्रेस की राजनीतिक दुश्मनी जगजाहिर है और ऐसे में कांग्रेस अरविंद केजरीवाल को ऐसे किसी मंच पर प्रमुखता नहीं देना चाहती , जहां कांग्रेसी नेताओं के लिए असहज की स्थिति बने।

दरअसल कुछ विरोधी दल मोदी के विरोध में कथित रूप से एकजुट तो हुए लेकिन इनमें प्रधानमंत्री पद के इतने दावेदार हैं कि किसी एक नाम पर सहमति ही नहीं बन पा रही है और वे मौका मिलते ही खुद को पीएम कंडीडेट घोषित कर देते हैं। गौर करने वाली बात यह है कि पटना में आयोजित विपक्षी की मीटिंग में गिनाने के लिए कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, बिहार के सीएम नीतिश कुमार , डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव, बंगाल की मुख्यमंत्री ममता दीदी, दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल, झारखंड के सीएम हेमंत सोरेन के अलावा यूपी के पूर्व सीएम अखिलेश यादव, जम्मू–कश्मीर के पूर्व

शिव सिंह

सीएम अब्दुल्ला, महबूबा मुफ्ती समेत विपक्षी दलों के कई नेताओं ने लगभग तीन घंटे तक मोदी सरकार का विकल्प बनकर वर्ष २०२४ के लोकसभा चुनाव में गठबंधन की सरकार बनाने के लक्ष्य पर चर्चा की। बैठक में विपक्षी दल न तो अपना देश की जनता के समक्ष कोई ठोस एजेंडा रख पाया और न ही अपना कोई सर्वमान्य नेता का चुनाव ही कर पाया जबकि घोषित एजेंडा भाजपा सरकार को केंद्र की सत्ता से बेदखल करना बताया।

अब देश की जनता विपक्षी दलों की इस एकजुटता को क्या नाम देगी ? खासकर जब देश के लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लोगों की भावनाओं के अनुरूप लगातार काम कर रहे हैं। गरीब, मध्यम और कमजोर वर्गों से लेकर सभी समाज के लोगों तक विकास की योजनाएं पहुंच रही हैं। सरकार की कल्याणकारी योजनाएं–प्रधानमंत्री आवास योजन, जनधन योजना, मुफ्त राशन वितरण, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्वरोजगार योजना से लेकर अन्यान्य योजनाएं विकास की नई इबारत लिख रही हैं। शायद यही बडा कारण है कि मोदी सरकार के द्वितीय कार्यकाल में पहले के मुकाबले प्रचंड बहुमत से सरकार बनी है और वर्ष २०२४ में भी तीसरी बार मोदी देश की जनता का नेतृत्व करते हुए प्रधानमंत्री की कुर्सी संभालेंगे।

भाजपा बढ़ा रही एनडीए परिवार

बिहार की राजधानी पटना में कुछ विपक्षी राजनीतिक दलों की मीटिंग के मद्देनजर भाजपा भी अपने परिवार एनडीए यानी नेशनल ड्रीम ऑपरेटिंग एलाइंस की ताकत बढ़ाने में जुट गई है। पार्टी नेतृत्व अपने कई पुराने और नए साथियों से मुलाकात कर रहा है और यही कारण है कि पंजाब, बिहार, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना जैसे कई राज्यों मं विश्वस्त सहयोगियों की तलाश हो रही है। विकास योजनाओं को तेजी से आगे बढ़ाया जा रहा है। विपक्षी गठबंधन को समर्थन न मिलने की यह भी एक बड़ी वजह है।

यूपी में भाजपा सबसे आगे, बिखरा–बेचारा विपक्ष

उत्तर प्रदेश में भाजपा की ताकत के आगे विपक्षी पूरी तरह से पस्त हैं। योगी सरकार के कामकाज और कानून व्यवस्था से उत्तर प्रदेश में विकास का रथ तेजी से आगे बढ़ रहा है जबकि विपक्षी दलों के पास कोई मुददा तक नहीं है। ऐसे में वे बिल्कुल असहाय से हो गए हैं। कांग्रेस और बसपा की हालत किसी से छुपी नहीं हैं जबकि समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव

बेमेल, अवसरवादी दल एक नहीं हो सकते : केशव

प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य ने पटना में विपक्षी दलों की बैठक पर तंज कसते हुए कहा कि जिनका परिवार तंत्र ही लोकतंत्र था, जिनके परिवार की राजनीति खतरे में है। जिनके भ्रष्टाचार का खुलासा हो रहा है। ऐसे सभी मुद्दाविहीन विपक्षी दलों के नेता पटना में बैठक में सम्मिलित हुए। बैठक में शामिल होने वाले दलों का एजेण्डा एक है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले 9 वर्षों की केन्द्र सरकार के अभूतपूर्व निर्णयों का विरोध ही विपक्ष का एजेण्डा है। जम्मू कश्मीर से धारा 370 को हटाने का विरोध करने वाले, अयोध्या में भव्य राममंदिर के निर्माण में बाधक तथा रामभक्तो पर गोली चलाने वाले, गरीब विरोधी, किसान विरोधी, भाजपा विरोधी, राष्ट्र के विकास के विरोधी तथा मोदी जी के विरोधी पटना में बैठक में सम्मिलित हुए। पटना में विपक्षियों की बैठक खोदा पहाड़ निकली चुहिया जैसी है, इस बैठक का कोई निष्कर्ष नहीं निकला है। बैठक में शामिल नेताओं ने प्रधानमंत्री पद के अपनी दावेदारी को भी नहीं छोड़ा है। उन्होंने विपक्षी दलो की बैठक पर कटाक्ष करते हुए कहा कि दिल मिले न मिले हाथ मिलाते चलिए, अपना–अपना भ्रष्टाचार छिपाते चलिए।

श्री मौर्य ने कहा ऐसे सभी राजनीति दल के नेता जो पटना में एकत्र थे। उन दलों के पास भाजपा के खिलाफ और मोदी जी के खिलाफ 2024 के लोकसभा चुनाव में कोई मुद्दा नहीं है। मुद्दाविहीन तथाकथित विपक्ष को मोदी फोबिया हो गया है। सांप और नेवला जैसे संग नहीं रह सकते, केर–बेर का संग

पटना की मीटिंग में गए थे लेकिन उत्तर प्रदेश उनकी क्षमता पर संदेह है कि वे गठबंधन के लिए कुछ कर पाएंगे। बहुजन समाज पार्टी अभी तक एकला चलो की रणनीति पर है जबकि विधानसभा चुनाव २०२२ में अखिलेश यादव का साथ देने वाले छोटे–छोटे दल इस बार एनडीए की ओर ललचायी नजरों से देख रहे हैं। ओम प्रकाश राजभर तो खुलेआम संकेत देकर अखिलेश यादव को चिढ़ा रहे हैं।

फेल हो रही नीतीश की मोर्चाबंदी

भाजपा को घेरने की हर मोर्चाबंदी में बिहार के सीएम नीतिश कुमार फेल साबित हो रहे हैं। सालों तक भाजपा के साथ गलबहियां डालकर राज करने वाले नीतिश कुमार अब उसी भाजपा के विरोध की धुरी बनने की कोशिश कर रहे हैं। भाजपा से अलग होने के बाद सीएम नीतीश कुमार अपने दोस्तों व सहयोगी दलों को ही संभा नहीं पा रहे हैं। बिहार के पूर्व सीएम जीतन राम मांझी हाल ही नीतिश कुमार से अलग होकर एनडीए के साथ होने के लिए बेताब हैं। इसी प्रकार आरसीपी सिंह भी अब भाजपा के हो चुके हैं। नीतीश कुमार के खासमखास रहे उपेंद्र कुशवाहा बड़ा झटका देते हुए अपनी अलग पार्टी बनाकर एनडीए के साथ गठबंधन की राह तलाश रहे हैं। वीआईपी के मुकेश शाहनी भी एनडीए के साथ आने के लिए तैयार हैं।

केसीआर से टूटी दोस्ती

विपक्षी दलों की एकता की बात पहली बार नहीं हो रही है। वर्ष २०22 में भी तेलंगाना के सीएम चंद्रशेखर राव और बिहार के सीएम नीतीश कुमार ने पटना में साथ मिलकर बीजेपी के खिलाफ लडने् का ऐलान किया था हालांकि बाद में दोनों नेताओं के बीच रिश्ते कटु हो गए और इस बार तो पटना की मीटिंग से केसीआर ने दूरी ही बनाए रखी।

बीजद नीतीश को नहीं दे रहा भाव

भाजपा को घेरने की मुहिम में लगे बिहार के सीएम नीतीश कुमार को झटका पर झटका लग रहा है। नीतीश कुमार ओडिशा जाकर सीएम नवीन पटनायक को साथ लेने के लिए जुटे थे लेकिन बीजद नेता और सीएम पटनायक ने चाय पिलाकर विदा कर दिया। ऐसे में विपक्षी एकता के लिए की राह कांटों भरी हो गई है, जबकि भाजपा का समर्थन बढ़ता जा रहा है। ऐसे में देश की राजनीति में ऐसे महागठबंधन की राजनीति का भविष्य नजर नहीं आ रहा है और वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ही देश का नेतृत्व करेगी।

नहीं हो सकता उसी प्रकार अवसरवादी दल एक नहीं हो सकते। उत्तर प्रदेश में 2019 के लोकसभा चुनाव में सपा–बसपा–कांग्रेस का बेमेल गठबंधन हुआ। लेकिन आज की पटना की बैठक में केवल समाजवादी पार्टी हिस्सेदार रही और बसपा, रालोद ने किनारा कर लिया। कल तक जिन राजनीतिक दलों और उनके नेताओं को नारा हुआ करता था कि कांग्रेस हटाओ, देश बचाओं। वहीं राजनीति दल और उसके नेता आज कांग्रेस पार्टी की कठपुतली बनें हुए है। 2024 के लोकसभा चुनाव में एक तरफ माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा और उसका गठबंधन होगा। दूसरी ओर श्री राहुल गांधी की कांग्रेस पार्टी के पीछे खडे वह राजनीति दल होगें। जो एक दूसरे से विपरीति ध्रुवों पर खड़े हुए है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कह रही है कि कांग्रेस पार्टी को पश्चिम बंगाल में हमारे खिलाफ धरना नहीं देना चाहिए। वहीं दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल कह रहे है कि कांग्रेस को पंजाब और दिल्ली से अपना दावा छोड़ देना चाहिए। उत्तर प्रदेश में सपा मुखिया अखिलेश यादव कहते है कि कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में अपना दावा छोड़ देना चाहिए। जिन दलों की लोकसभा में कोई सदस्य संख्या नहीं है और जिनका भविष्य में भी कोई सदस्य संसद में पहुंचेगा या नहीं इसकी भी संभावना नहीं है, ऐसे दल भी बैठक का हिस्सा है।

श्री केशव प्रसाद मौर्य ने पटना में विपक्षी दलों की बैठक में सीएमपी (कामन मिनिमन प्रोग्राम) का सही मतलब बताते हुए कहा कि करप्शन मैक्सिमम प्रोग्राम ही इन दलों का सीएमपी है। राजनीति में अपने परिवार को बचाने की कवायद है। भारतीय राजनीति में परिवारवाद का शिरोमणि गांधी परिवार इनका लालू, अखिलेश, ममता, स्टालिन, हेमंत, महबूबा, ठाकरे, पवार परिवार रोल मॉडल बन चुका है। लेकिन यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की भ्रष्टाचार व परिवारवादी राजनीति के खिलाफ मुहिम में इनकी कोई भी चाल सफल नहीं होने वाली, इनके दलदल से अगले साल कमल ही खिलेगा। श्री मौर्य ने कहा कि यह पहली बार साथ मिलकर नहीं लड़ रहे है। अलग–अलग राज्यों में यह दल पहले भी भाजपा के खिलाफ एक जुट होकर लड़ चुके है। उत्तर प्रदेश से होकर दिल्ली का रास्ता जाता है, यहां सपा–बसपा–कांग्रेस एक दूसरे के साथ मिलकर भाजपा के खिलाफ ताल ठोंक चुके है, लेकिन पिछले दो लोकसभा व दो विधानसभा चुनावों में इतनी बुरी गत हुई कि उससे अभी तक उबर नहीं सके है। उन्होने कहा कि विपक्ष के नेता मोदी जी को गाली देते नहीं थकते, लेकिन जनता मोदी जी को आशीर्वाद देते नहीं थकती है। मोदी जी देश ही नहीं आज दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता बन चुके है।

योग आनन्द का सागर

योग भारत का प्राचीन विज्ञान है। दर्शन भी है। इसकी स्वीकृति अंतर्राष्ट्रीय है। दो दिन बाद 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस है। इस महापर्व की तैयारियां उल्लासधर्मा हैं। भारत के सभी क्षेत्रों राज्यों में योग दिवस के आयोजन होने जा रहे हैं। भारत के योग विज्ञान को अंतर्राष्ट्रीय मान्यता दिलाने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को है। मोदी के प्रयास से 177 देशों ने योग की पक्षधरता की। भारतीय राष्ट्र जीवन में योग यत्र तत्र सर्वत्र है। बिना प्रयास किसी का मिलना जुड़ना संयोग है। अलग हो जाना वियोग है। सहायक बना लेने का ज्ञान उपयोग हैं। आरोपित करना अभियोग है। वस्तुओं का उत्पादन करना उद्योग है। शक्ति का गलत प्रयोग दुरूपयोग है। शक्ति का प्रतिस्पर्धी प्रयोग प्रतियोग है। प्रतियोगिता शब्द इसी से बना है। ज्ञान को साधना का उपकरण बनाना ज्ञान योग है। भक्ति मार्ग भक्ति योग है। कर्म प्रधानता कर्म योग है। संसार को माया और ब्रह्म को वास्तविक जान सन्यास योग है। ज्योतिष में गृह स्थितियों की अनुकूलता संयोग है। गणित में अंकों का जोड़ भी योग है। योग जोड़ने का विज्ञान है। आत्मबोध का दर्शन है। यह अंधविश्वास नहीं है।

योग अस्तित्व से शक्ति अर्जित करने का विज्ञान है। इसके बीज सूत्र ऋग्वेद में है। उपनिषदों में है। गीता में विस्तृत हैं। बुद्ध पंथ में तमाम यौगिक क्रियाओं का उल्लेख है। मार्शल ने हड़प्पा सभ्यता पर 'मोहनजोदड़ो एंड दि इंडस सिविलाइजेशन' पुस्तक लिखी थी। इस ग्रंथ में शिव को आर्य देवताओं से भिन्न देवता बताया है।

> ज्ञान को साधना का उपकरण बनाना ज्ञान योग है। भक्ति मार्ग भक्ति योग है। कर्म प्रधानता कर्म योग है। संसार को माया और ब्रह्म को वास्तविक जान सन्यास योग है।

हृदयनारायण दीक्षित

किताब में योग के बारे में लिखा है, ''शैव मत के समान योग का उद्भव भी आर्यों से पहले की आबादी में हुआ था। काव्यों के युग के पहले उसकी कोई महत्वपूर्ण भूमिका आर्यों के धर्म में नहीं थी। मार्शल का विवेचन सही नहीं है। वे सिंधु सभ्यता को वैदिक सभ्यता से प्राचीन मानते थे। उनकी मानें तो योग सिंधु सभ्यता के समय विकसित हुआ। वैदिक पूर्वजों ने इसे बहुत बाद में जाना। यह तथ्य संगत नहीं है। वैदिक पूर्वज योग से परिचित थे। योग चित्त चंचलता की समाप्ति का विज्ञान है। योग के द्वारा बुद्धि का जागरण वैदिक काल में भी था। यह जागरण सामान्य नहीं है। ऋग्वेद (5.44.14) में कहते हैं, ''जो जागे हुए हैं। ऋचाएं उनकी कामना करती हैं।'' मन की चंचलता मनुष्य का स्वभाव है। स्थिरप्रज्ञता योग की उपलब्धि है। ऋग्वेद में इन्द्र से कहते हैं, ''आपका मन हमारी ओर हो। (8.45.6) वैदिक देव इन्द्र योग के विज्ञ थे। इन्द्र की प्रशंसा में कहते हैं, ''आपने जन्म लेते ही अपना मन स्थिर किया।'' सृजन का आनंद भी योग से मिलता है। ऋग्वेद (9.68.5) में कहते हैं, ''आनंद प्रशिक्षित मन से आता है। मार्शल की आधी बात ठीक है कि हड़प्पावासी योग से परिचित थे।'' मार्शल की यह बात गलत है कि ऋग्वैदिककाल में योग साधना नहीं थी। मार्शल की यह बात भी गलत थी कि आर्य जन योग से अपरिचित थे। ऋग्वेद में हिरण्यगर्भ का उल्लेख है। वे योग के प्रथम प्रवक्ता माने जाते हैं। योग को व्यवस्थित रूप में विज्ञान बनाने का काम ईसा की दूसरी सदी पूर्व पतंजलि ने किया था। माना जाता है कि वे पुष्यमित्र शुंग के परामर्शदाता थे। पतंजलि ने

पाणिनि के व्याकरण पर महाभाष्य लिखा था। उन्होंने ही 'योगसूत्र' नामक महान ग्रंथ लिखा है।

भारतीय दर्शन में दुख का मूल कारण अविद्या है। सांसारिक भोग सुख नहीं देते। पतंजलि ने चित्तवृत्तियों को सुख दुख का कारण माना है। सिग्मंड फ्रायड प्रसिद्ध मनसविद् थे। उन्होंने मन का मजेदार विश्लेषण किया है। उन्होंने तीन तरह के मन बताए हैं। पहला क्षिप्त मन। दूसरा विक्षिप्त मन और तीसरा मूढ़ मन। लेकिन पतंजलि ने मूढ़, क्षिप्त, विक्षिप्त, एकाग्र और निरुद्ध सहित चित्त की पांच अवस्थाएं बताईं। इन चित्त वृत्तियों की समाप्ति को योग का लक्ष्य बताया – योगश्च चित्त वृत्ति निरोधः (योगसूत्र 2) बताया। मनुष्य का चित्त द्रव्य या पदार्थ नहीं है। पदार्थ होता तो विज्ञान की पकड़ में आता। चित्त मनुष्य शरीर का अति सूक्ष्मतम अदृश्य भाग है। मन और शरीर मिले हुए हैं। मन खराब हो तो शरीर कष्ट पाता है। शरीर में चोट हो तो मन दुखी होता है। अपमान का अनुभव मन पर होता है। ताप शरीर पर होता है। बाईबिल में भी योग के संकेत हैं। बाइबिल (मैथ्यू 5.3) में कहते हैं, ''वे धन्य हैं जो मन के दीन हैं। स्वर्ग का राज्य उनका है।'' एकाग्र मन आनंद का स्रोत है।

योग आनंद का सागर है। योग सिद्ध स्वस्थ व्यक्ति हिंसक नहीं हो सकता। उसके चित्त से सृजन फूटते हैं। योग सिद्धि के लगातार अभ्यास जरूरी है।

मन महत्वपूर्ण है। यजुर्वेद के शिव संकल्प सूत्रों में मन को शिवत्व से भरने की स्तुति है। इसमें 6 मंत्र हैं। कहते हैं, ''हमारा मन नदी पर्वत आकाश तक जाता है। हम उसे वापिस बुलाते हैं।'' सभी 6 मंत्रों के अंत में 'तन्मे मनः शिव संकल्पम अस्तु' जुड़ा हुआ है। चित्तवृत्तियों की समाप्ति से एकाग्रता आती है। एकाग्रता की प्राप्ति योगाभ्यास से होती है। मन के साथ शरीर भी स्वयं में स्थिर होता है। स्वयं में स्थिर होना स्वस्थ होना है। पतंजलि के सूत्र संक्षिप्त हैं। कहीं कहीं एक ही शब्द का वाक्य है। वे आसन, प्राणायाम और ध्यान के माध्यम से आत्मबोध कराते हैं। आसन और प्राणायाम सरल शब्द हैं। ध्यान और समाधि कठिन है। ध्यान एकाग्रता है। पतंजलि के अनुसार ध्यान का केन्द्र केवल उपकरण है। योगसूत्र में प्रीतिकर विषय पर ध्यान के विकल्प हैं। योगसूत्र (समाधिपाद 39) में कहते हैं, ''यथाभिमतध्याना द्वा – जिसकी जैसी इच्छा हो उस केन्द्र पर ध्यान करे। फिर कहते हैं अथवा ईश्वर पर प्राण – ध्यान लगाएं – ईश्वर प्रणिधाना द्वा (वही 23) पतंजलि के सूत्रों में ईश्वर पर ध्यान एक विकल्प है। पतंजलि का ईश्वर सामान्य ईश्वर नहीं है। वे ईश्वर की परिभाषा भी बताते हैं, ''क्लेश, कर्म, कर्मफल और वासना से असम्बद्ध चेतना विशेष ईश्वर है (वही 24)। आगे कहते हैं, ''समय के पार होने के कारण वह गुरुओं का गुरु है।'' योग सिद्धि में समय नहीं होता। इस परिभाषा के अनुसार कोई भी योग के माध्यम से ईश्वर जैसा हो सकता है।

योग आनंद का सागर है। योग सिद्ध स्वस्थ व्यक्ति हिंसक नहीं हो सकता। उसके चित्त से सृजन फूटते हैं। योग सिद्धि के लगातार अभ्यास जरूरी है। उपलब्धि प्राप्ति के प्रति अनासक्ति से योग के लाभ मिलते हैं। पतंजलि ने स्वयं कहा है कि ''जिनके प्रयास मृदु या मध्यम होते हैं। उन्हें योग के लाभ उसी मात्रा व समय में मिलते हैं। जिनके प्रयास तीव्र होते हैं उन्हें योग का फल तत्काल मिलता है। पतंजलि ने योग सिद्ध बुद्धि के लिए ऋतम्भरा शब्द का प्रयोग किया है – ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा। ऋतं शब्द पहली बार ऋग्वेद में आया है। इसका अर्थ अस्तित्व का संविधान है। ऋतम्भरा साधारण बुद्धि नहीं है। एक बुद्धि मनुष्य की होती है। एक बुद्धि समूचे ब्रह्माण्ड की होती है। ऋतम्भरा पूरे ब्रह्माण्ड की बुद्धि है। फिर समाधि की चर्चा है। और अंततः कैवल्य की। योग दर्शन सत्य के द्वार खोलता है। योग से तमाम बीमारियों के उपचार भी होते हैं। लेकिन ऐसे उपचार योग के प्राथमिक चरण में ही पूरे हो जाते हैं। असली बात है कैवल्य या निर्बीज समाधि। तब योगी संसार में रहते, चलते, उठते, बैठते सभी अवस्थाओं में निस्पृह और निष्काम रहता है। योग विज्ञान भारतीय दर्शन का प्रतिष्ठित अंग है।

अमेरिका में 'मोदी – मोदी' का मतलब...

समय बलवान होता है। एक समय था जब भारत के ही कई सांसदों ने नरेंद्र मोदी को वीजा ना देने का अमेरिका से लिखित निवेदन किया था, एक यह समय है जब मोदी के नेतृत्व में अमेरिका और भारत के रिश्ते सर्वाधिक बुलंद हुए हैं। मोदी की अमेरिका राजकीय यात्रा से यह तथ्य एक बार फिर प्रमाणित हुआ। यहां नरेंद्र मोदी का अभूत पूर्व स्वागत हुआ. न्युयार्क से लेकर वाशिंग्टन वाइट हाउस तक मोदी मोदी की गूंज हुई। अमेरिका से साथ मजबूत रिश्तों की शुरुआत नरेंद्र मोदी के पहले कार्यकाल में हो चुकी थी। उस समय बराक ओबामा अमेरिका के राष्ट्रपति थे। उन्होंने कतिपय भारतीय सांसदों की मोदी को वीजा न देने की अपील वाली चिट्ठी रद्दी की टोकरी में फेंक दी थी।

उन्होंने स्वयं नरेंद्र मोदी को आमंत्रित किया था। मोदी के लिए अमेरिका में रेड कार्पेट बिछाई गई थी। बराक भी भारत आये थे। सामरिक व व्यापारिक साझेदारी आगे बढ़ने लगी।

बराक के जिन चुनिंदा विश्व नेताओं से अति घनिष्ठ संबन्ध थे, उनमें नरेंद्र मोदी शीर्ष पर थे। बराक की यह परम्परा उनके उत्तराधिकारी डोनाल्ड ट्रम्प ने भी आगे बढ़ाई है। उनके कार्यकाल में भी दोनों देशों के रिश्ते मजबूत हुए हैं. नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में भारत की भूमिका का विस्तार हुआ है। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में भारत का महत्व बढा है। इसको भी बाइडेन समझते है. नरेंद्र मोदी और निवर्तमान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बीच बेहतर आपसी समझ थी। उस दौर में दोनों देश के बीच साझेदारी का विस्तार हुआ था उनके उत्तराधिकारी जो बाइडेन के दृष्टिकोण को लेकर आशंका व्यक्त की जा रही थी। कहा गया कि वह अनेक मुद्दों पर भारत का विरोध कर चुके है। लेकिन यह उस समय की बात है जब वह राष्ट्रपति नहीं बने थे। राष्ट्रपति बनने के बाद उनका निजी रुख ही महत्वपूर्ण नहीं रह जाता। बल्कि अमेरिकी आवाम का रुख देखना भी राष्ट्रपति के लिए अपरिहार्य हो जाता है। अमेरिका के लोग भी आतंकवाद के विरोधी है। इस पर नरेंद्र मोदी का स्पष्ट रुख वहां चर्चा में रहता है। आमजन इससे प्रभावित है। इसके अलावा भारत व अमेरिका की आर्थिक व्यापारिक सामरिक साझेदारी को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता.दोनों देशों के बीच आपसी विश्वास बढ़ा है। सहयोग का नया अध्याय शुरू हुआ है। नेतृत्व के आधार पर विदेश नीति का प्रभाव निर्धारित होता है। देश वही रहता है, लेकिन नेतृत्व बदलते ही अंतरराष्ट्रीय जगत में उसकी भूमिका में बदलाव आ जाता है। नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय विदेश नीति का प्रभाव बढ़ा है। व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय में मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन के बीच आमने–सामने की बैठक हुई। बैठक के बाद उन्होंने ड्रोन, जेट इंजन और स्पेस समेत कई समझौतों का एलान किया। भारत ने आर्टेमिस समझौते में शामिल होने का फैसला किया है। यह समान विचारधारा वाले देशों को नागरिक अंतरिक्ष खोज के मुद्दे पर एक साथ लाता है। नासा व इसरो 2024 में अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए एक संयुक्त मिशन पर सहमत हुए हैं। मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति ने जनरल एटॉमिक्स एमक्यू–9 रीपर सशस्त्र ड्रोन की खरीद पर एक मेगा सौदे की घोषणा की। एमक्यू–9 रीपर ड्रोन भारत की राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इसकी तैनाती हिंद महासागर, चीनी सीमा के साथ अन्य अंतरराष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करेगी। करीब 29 हजार करोड़ रुपये के इस सौदे से भारत को 30 लड़ाकू ड्रोन मिलेंगे। इनमें से 14 नौसेना और आठ–आठ वायुसेना और सेना को मिलेंगे। अमेरिका और भारत के बीच जेट इंजन के सह–उत्पादन पर भी समझौता हुआ है। दोनों देशों ने भारत में F-414 जेट इंजन का साझा उत्पादन करने के जनरल इलेक्ट्रिक के प्रस्ताव का स्वागत किया। जीई और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड ने एक समझौते पर करार किया है। यह भारत में F-414 इंजन बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है और इससे अमेरिकी जेट इंजन प्रौद्योगिकी का पहले से कहीं अधिक हस्तांतरण (टेक्नोलॉजी ट्रांसफर) हो सकेगा।

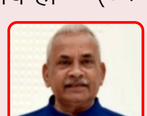
डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

स्थापित होगा सेमीकंडक्टर संयंत्र

कंप्यूटर चिप बनाने वाली कंपनी माइक्रोन गुजरात में अपना सेमीकंडक्टर असेंबली और परीक्षण संयंत्र

स्थापित करेगी, जिस पर कुल 2.75 अरब डॉलर का निवेश किया जाएगा। इसको लेकर भी दोनों देशों की बीच समझौता हुआ है।
अमेरिका बेंगलुरु और अहमदाबाद में दो नए वाणिज्य दूतावास खोलेगा। भारत लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा देने के लिए सिएटल में एक मिशन स्थापित करेगा। भारत की राजधानी में अमेरिका का दूतावास दुनिया के सबसे बड़े अमेरिकी राजनयिक मिशनों में से एक है। यह दूतावास मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद में चार वाणिज्य दूतावासों की गतिविधियों का समन्वय करता है. मोदी पहली बार राजकीय यात्रा पर अमेरिका पहुंचे. इस यात्रा के लिए खुद अमेरिकी राष्ट्रपति मेहमान नेता को आमंत्रित करते हैं। अमेरिकी राजकीय यात्रा को सबसे उच्च स्तर का दर्ज मिला है। राजकीय यात्रा पर आने वाले मेहमान का अमेरिकी राष्ट्रपति खुद स्वागत करते हैं। अमेरिकी राजकीय यात्रा पर जाने वाले नेता को इक्कीस तोपों की सलामी दी जाती है। राजकीय यात्रा पर आने वाले नेता का भव्य स्वागत किया जाता है। यात्रा पर आने वाला सारा खर्च अमेरिका उठाता है। राजकीय यात्रा पर जाने वाले नेता अमेरिकी राष्ट्रपति और प्रथम महिला के साथ डिनर करते हैं। इस यात्रा पर आयोजित होने वाले डिनर कार्यक्रम को 'स्टेट डिनर' कहा जाता है। राजकीय यात्रा पर आने वाले नेता को ब्लेयर हाउस में ठहराया जाता है, जो राष्ट्रपति का गेस्ट हाउस है. नरेंद्र मोदी ने वाशिंगटन में अमेरिकी सीईओ के विभिन्न वर्गों से मुलाकात की और उनसे भारत में तकनीकी सहयोग की मांग की। बैक–टू–बैक बैठकों की श्रृंखला में मोदी ने एप्लाइड मैटेरियल्स के प्रेसिडेंट और सीईओ गैरी ई. डिकर्सन से मुलाकात की और उनकी कंपनी को भारत में सेमीकंडक्टर इकोसिस्टम को मजबूत करने और प्रक्रिया प्रौद्योगिकी और उन्नत पैकेजिंग क्षमताओं को विकसित करने में योगदान देने के लिए आमंत्रित किया।

माइक्रोन के भारतीय–अमेरिकी प्रमुख संजय मेहरोत्रा से मुलाकात की

मोदी और डिकर्सन ने कुशल कार्यबल बनाने के लिए भारत में शैक्षणिक संस्थानों के साथ एप्लाइड मैटेरियल्स के सहयोग की क्षमता पर चर्चा की।इसके बाद प्रधानमंत्री ने जनरल इलेक्ट्रिक के सीईओ लॉरेंस कल्प जूनियर से मुलाकात की। इस दौरान मोदी ने भारत में विनिर्माण की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता के लिए कंपनी की सराहना की।भारत में विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए जीई के बड़े प्रौद्योगिकी सहयोग पर केंद्रित थी। मोदी ने कंपनी को भारत में विमानन और नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्रों में बड़ी भूमिका निभाने के लिए भी आमंत्रित किया। मोदी ने अमेरिका में कहा कि क्रॉस बॉर्डर आतंकवाद को समाप्त करने के लिए ठोस कार्रवाई जरुरी है। भारत और अमेरिका आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रों में सहयोग करते मजबूत संबंध बना रहे हैं। अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव के सवाल पर पीएम मोदी ने कहा, ''लोकतंत्र हमारी रगों में है और जाति, पंथ एवं धर्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव का कोई सवाल ही नहीं है. हमारी सरकार सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के सिद्धांत पर चलती है और भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई भेदभाव नहीं राष्ट्रपति बाइडेन ने कहा कि भारत और अमेरिका दोनों के डीएनए में लोकतंत्र है। यूक्रेन के घटनाक्रम की शुरूआत से ही भारत ने वार्ता और कूटनीति के माध्यम से इस विवाद को सुलझाने पर ज़ोर दिया है. अफ्रीका को G-20 का पूर्ण सदस्य बनाने सम्बन्धी मोदी के प्रस्ताव का अमेरिकी राष्ट्रपति ने समर्थन किया. बाइडेन ने कहा कि दोनों देश डेमोक्रेसी,डायवर्सिटी, कल्चर में भरोसा करते हैं। भारत और अमेरिका के डीएनए में डेमोक्रेटिक वैल्यूज हैं। अमेरिका–भारत के रिश्ते बेहद मजबूत हैं. बीते देश में दोनों देशों के बीच व्यापार डबल हुआ है। भारत और अमेरिका साझा युद्धाभ्यास बढ़ाएंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने कहा कि भारत और अमेरिका वर्ष 2024 तक अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (आईएसएस) में भारतीय अंतरिक्ष यात्री भेजने के लिए गठजोड़ कर रहे हैं। वहीं, भारत के अर्टेमिस संधि में शामिल होने का फैसले की घोषणा के बारे में मोदी ने कहा कि हमने अंतरिक्ष सहयोग में नया कदम आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि भारत और अमेरिका के बीच गठजोड़ की असीमित संभावनाएं हैं।

आपातकाल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

आपातकाल स्वतंत्र भारत के इतिहास में सबसे विवादास्पद एवं अलोकतांत्रिक काल कहा जाता है। आपातकाल को 48 वर्ष बीत चुके हैं, परन्तु हर वर्ष जून मास आते ही इसका स्मरण ताजा हो जाता है। इसके साथ ही आपातकाल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका भी स्मरण हो जाती है। संघ ने आपातकाल का कड़ा विरोध किया था। संघ के हजारों कार्यकर्ता जेल गए थे एवं बहुत से कार्यकर्ताओं ने बलिदान दिया था।

उल्लेखनीय है कि 12 जून 1975 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाया था कि इंदिरा गांधी ने वर्ष 1971 के लोकसभा चुनाव में अनुचित तरीके अपनाए। न्यायालय ने उन्हें दोषी ठहराते हुए उनका चुनाव रद्द कर दिया था। इंदिरा गांधी के चुनाव क्षेत्र रायबरेली से उनके प्रतिद्वंदी राज नारायण थे। यद्यपि चुनाव परिणाम में इंदिरा गांधी को विजयी घोषित किया गया था। किन्तु इस चुनाव में पराजित हुए राज नारायण चुनावी प्रक्रिया से संतुष्टं नहीं थे। उन्हों ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय में इंदिरा के विरुद्ध याचिका दाखिल करते हुए उन पर चुनाव जीतने के लिए अनुचित साधन अपनाने का आरोप लगाया। उनका आरोप था कि इंदिरा गांधी ने चुनाव जीतने के लिए सरकारी मशीनरी का अनुचित उपयोग किया है।

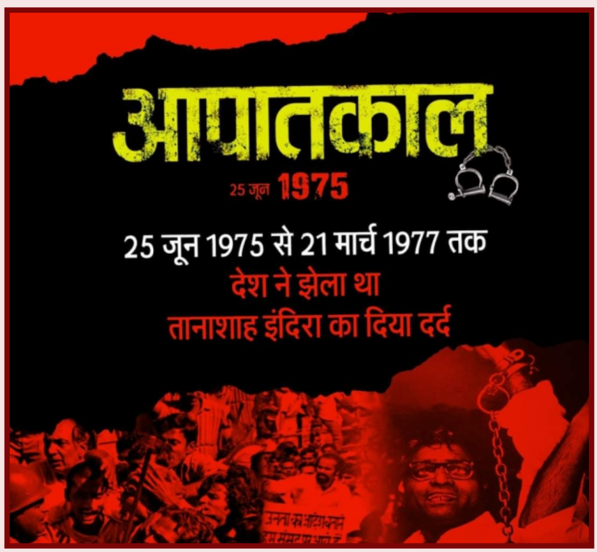

25 जून 1975 को तत्कालीन राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने तत्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी के कहने पर भारतीय संविधान की अनुच्छेद 352 के अधीन आपातकाल की घोषणा कर दी। यह आपातकाल 21 मार्च 1977 तक रहा। इस समयावधि में नागरिक अधिकारों को स्थगित कर दिया गया। सभी स्तर के चुनाव भी स्थगित कर दिए गए। सत्ता विरोधियों को बंदी बना लिया गया। प्रेस पर भी प्रतिबंधित लगा दिया गया। पत्रकार भी बंदी बनाए गए। श्रीमती इंदिरा गांधी के पुत्र संजय गांधी के नेतृत्व में पुरुष नसबंदी अभियान चलाया गया। कहा जाता है कि इस अभियान में अविवाहित युवकों की भी जबरन नसबंदी कर दी गई। इससे लोगों में सत्ता पक्ष के प्रति भारी क्रोध उत्पन्न हो गया।

माणिकचंद्र वाजपेयी अपनी पुस्तक आपातकालीन संघर्ष गाथा में लिखते हैं– "कांग्रेस ने 20 जून, 1975 के दिन एक विशाल रैली का आयोजन किया तथा इस रैली में देवकांतबरुआ ने कहा था, "इंदिरा तेरी सुबह की जय, तेरी शाम की जय, तेरे काम की जय, तेरे नाम की जय" और इसी जनसभा में अपने भाषण के दौरान इंदिरा गांधी ने घोषणा की कि वे प्रधानमंत्री पद से त्यागपत्र नहीं देंगी।"

जयप्रकाश नारायण ने आपातकाल का विरोध किया। उन्होंने इसे श्भारतीय इतिहास की सर्वाधिक काली अवधिश कहा। माणिकचंद्र वाजपेयी आगे लिखते हैं– "जयप्रकाश नारायण जी ने रामलीला मैदान पर विशाल जनसमूह के सम्मुख 25 जून, 1975 को कहा, "सब विरोधी पक्षों को देश के हित के लिए एकजुट हो जाना चाहिए अन्यथा यहां तानाशाही स्थापित होगी और जनता दुखी हो जाएगी।" लोक संघर्ष समिति के सचिव नानाजी देशमुख ने वहीं पर उत्साह के साथ घोषणा कर दी, "इसके बाद इंदिराजी के त्यागपत्र की मांग लेकर गांव–गांव में सभाएं की जाएंगी और राष्ट्रपति के निवास स्थान के सामने 29 जून से प्रतिदिन सत्याग्रह होगा।" उसी संध्या को जब रामलीला मैदान की विशाल जनसभा से हजारों लोग लौट रहे थे, तब प्रत्येक धूलिकण से मानो यही मांग उठ रही थी कि "प्रधानमंत्री त्यागपत्र दें और वास्तविक गणतंत्र की परम्परा का पालन करें।"

आपातकाल के कारण जनता त्राहिमाम कर रही थी। एच वी शेषाद्री की पुस्तक कृतिरूप संघ दर्शन के अनुसार सभी प्रकार की संचार व्यवस्था, यथा– समाचार–पत्र–पत्रिकाओं, मंच, डाक सेवा और निर्वाचित विधान मंडलों को ठप्प कर दिया गया। प्रश्न था कि इसी स्थिति में जन आंदोलन को कौन संगठित करे? इसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अतिरिक्त और कोई नहीं कर सकता था। संघ का देश भर में शाखाओं का अपना

डॉ. सौरभ मालवीय

जाल था और वही इस भूमिका को निभा सकता था। संघ ने प्रारम्भ से ही जन से जन के संपर्क की प्रविधि से अपना निर्माण किया है। जन संपर्क के लिए वह प्रेस अथवा मंच पर कभी भी निर्भर नहीं रहा। अतः संचार माध्यमों को ठप्प करने का प्रभाव अन्य दलों पर तो पड़ा, पर संघ पर उसका रंचमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अखिल भारतीय स्तर के उसके केन्द्रीय निर्णय, प्रांत, विभाग, जिला और तहसील के स्तरों से होते हुए गांव तक पहुच जाते हैं। जब आपात घोषणा हुई और जब तक आपातकाल चला, उस बीच संघ की यह संचार व्यवस्था सुचारू ढंग से चली। भूमिगत आंदोलन के ताने–बाने के लिए संघ कार्यकर्ताओं के घर महानतम वरदान सिद्ध हुए और इसके कारण ही गुप्तचर अधिकारी भूमिगत कार्यकर्ताओं के ठोर ठिकाने का पता नहीं लगा सके। सर संघचालक बालासाहब देवरस को 30 जून को नागपुर स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिया गया। इससे पूर्व उन्होंने आह्वान किया था कि इस असाधारण परिस्थिति में स्वयंसेवकों का दायित्व है कि वे अपना संतुलन न खोयें। सर कार्यवाह माधवराव मुले तथा उनके द्वारा नियुक्त अधिकारी के आदेशानुसार संघ–कार्य जारी रखें तथा यथापूर्व जनसंपर्क, जनजागृति और जनशिक्षा का कार्य करते हुए अपने राष्ट्रीय कर्तव्य का पालन करने की क्षमता जनसाधारण में निर्माण करें। संघ कार्यकर्ताओं ने उनके आह्वान के अनुसार ही कार्य किया।

आपातकाल की घोषणा के कुछ दिन पश्चात 4 जुलाई 1975 को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लोक संघर्ष समिति द्वारा आयोजित आपातकाल विरोधी संघर्ष में एक लाख से अधिक स्वयंसेवकों ने सत्याग्रह किया। आपातकाल के दौरान सत्याग्रह करने वाले कुल एक लाख 30 हजार सत्याग्रहियों में से एक लाख से अधिक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के थे। मीसा के अधीन जो 30 हजार लोग बंदी बनाए गए, उनमें से 25 हजार से अधिक संघ के स्वयंसेवक थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 कार्यकर्ता अधिकांशतः बंदीगृहों और कुछ बाहर आपातकाल के दौरान बलिदान हो गए। उनमें संघ के अखिल भारतीय व्यवस्था प्रमुख श्री पांडुरंग क्षीर सागर भी थे। सत्ता पक्ष के विरुद्ध जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन को संघ के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने जारी रखा। मोहनलाल रुस्तगी की पुस्तक आपातकालीन संघर्ष गाथा के अनुसार श्री जयप्रकाश नारायण ने अपनी गिरफ्तारी से पूर्व श्लोक संघर्ष समितिश का आन्दोलन चलाने के लिए श्राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघश के पूर्णकालिक कार्यकर्ता श्री नानाजी देशमुख को जिम्मेदारी सौंपी थी। जब नानाजी देशमुख गिरफ्तार हो गए तो नेतृत्व की जिम्मेदारी श्री सुन्दर सिंह भण्डारी को सर्वसम्मति से सौंपी गई। आपातकाल लगाने से उत्पन्न हुई परिस्थिति से देश को सचेत रखने के लिए तथा जनता का मनोबल बनाए रखने के लिए भूमिगत कार्य के लिए संघ के कार्यकर्ता तय किए गए।

संघ के स्वयंसेवकों ने सत्ता की नीतियों के विरोध में सत्याग्रह किया। इस कड़ी में 9 अगस्त,1975 को मेरठ नगर में सत्याग्रह किया गया। उसी दिन मुजफ्फरपुर में जगह– जगह जोरदार ध्वनि करने वाले पटाखे फोड़े गए। तत्पश्चात 15 अगस्त,1975 को लाल किले पर जब प्रधानमंत्री भाषण देने के लिए माइक की ओर बढीं उसी समय जनता के बीच से 50 सत्याग्रहियों ने नारे लगाए और पर्चे वितरित किए। इसके पश्चात 2 अक्टूबर को प्रधानमंत्री के सामने महात्मा गांधी की समाधि पर सत्याग्रह किया गया। 28 अक्टूबर, 1975 को राष्ट्रमंडल सांसदों का एक दल जब दिल्ली आया था, तब कार्यकर्ताओं ने उन्हें आपातकाल विरोधी साहित्य वितरित किया। 14 नवंबर, 1975 को प्रधानमंत्री के सामने नेहरू की समाधि के पास आपातकाल के विरोध में नारे लगाए गए। 24 नवंबर 1975 को अखिल भारतीय शिक्षक सम्मेलन में प्रधानमंत्री के सामने मंच पर जाकर सत्याग्राहियों ने पर्चे बित्रित किए और तानाशाही के विरोध में नारे लगाए। 7 दिसम्बर, 1975 को ग्वालियर में महान संगीतज्ञ तानसेन की समाधि पर सत्याग्रह किया गया। उस दिन रजत जयंती के कार्यक्रम का आयोजन था। 12 दिसम्बर, 1975 को दिल्ली में स्वामी श्रद्धानंद की मूर्ति के सामने सरदार पटेल की बेटी मणिबेन पटेल के नेतृत्व में महिलाओं द्वारा सत्याग्रह किया गया। बंबई की मिलों में मजदूरों द्वारा सत्याग्रह किया गया।

आपातकाल से कांग्रेस को बहुत हानि हुई। जनता में सरकार की छवि धूमिल होने लगी तथा उसके प्रति आक्रोश बढ़ता गया। इसके दृष्टिगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने लोकसभा भंग करके चुनाव करवाने की अनुशंसा कर दी। चुनाव में कांग्रेस पराजित हो गई। स्वयं इंदिरा गांधी अपने क्षेत्र रायबरेली से चुनाव में पराजित हो गईं। जनता पार्टी को भारी बहुमत प्राप्त हुआ। मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बने। इस प्रकार स्वतंत्रता के पश्चात प्रथम बार गैर कांग्रेसी सरकार बनी। नई केंद्र सरकार ने आपातकाल के दौरान लिए गए निर्णयों की जांच के लिए शाह आयोग का गठन किया। शाह कमीशन में अपनी रिपोर्ट में आपातकाल के दौरान हुई घटनाओं का उल्लेख करते हुए शासन व्यवस्था को हुई हानि पर चिंता व्यक्त की।

वास्तव में आपातकाल कांग्रेस के लिए हानिकारक रहा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने आपातकाल का जमकर विरोध किया। इसके कारण उसे सत्ता के क्रोध का दंश झेलना पड़ा, किन्तु आपातकाल के दौरान संघ द्वारा किए गए विरोध प्रदर्शनों ने लोगों में उसे विख्यात कर दिया। इस प्रकार लोकतंत्र की विजय घोष के साथ संघ बढ़ता गया।

भारत लोकतंत्र की जननी है : मोदी

बहुत से लोग कहते हैं कि प्रधानमंत्री के तौर पर मैंने ये अच्छा काम किया, वो बड़ा काम किया। 'मन की बात' के कितने ही श्रोता, अपनी चिट्ठियों में बहुत सारी प्रशंसा करते हैं। कोई कहता है ये किया, कोई कहता है वो किया, ये अच्छा किया, ये ज्यादा अच्छा किया, ये बढ़िया किया, लेकिन, मैं, जब भारत के सामान्य मानवी के प्रयास, उनकी मेहनत, उनकी इच्छाशक्ति को देखता हूँ, तो खुद अपने आप, अभिभूत हो जाता हूँ। बड़े से बड़ा लक्ष्य हो, कठिन–से–कठिन चुनौती हो, भारत के लोगों का सामूहिक बल, सामूहिक शक्ति, हर चुनौती का हल निकाल देता है। अभी हमने दो–तीन दिन पहले देखा, कि, देश के पश्चिमी छोर पर कितना बड़ा Cyclone आया। तेज चलने वाली हवाएँ, तेज बारिश। Cyclone Biparjoy (बिपरजॉय) ने कच्छ में कितना कुछ तहस–नहस कर दिया, लेकिन, कच्छ के लोगों ने जिस हिम्मत और तैयारी के साथ इतने खतरनाक Cyclone का मुक़ाबला किया, वो भी उतना ही अभूतपूर्व है। दो दिन बाद ही कच्छ के लोग, अपना नया वर्ष, यानि आषाढ़ी बीज भी मनाने जा रहे हैं। ये भी संयोग है कि आषाढ़ी बीज, कच्छ में वर्षा की शुरुआत का प्रतीक माना जाता है। मैं, इतने साल कच्छ आता–जाता रहा हूँ, वहाँ के लोगों की सेवा करने का मुझे सौभाग्य भी मिला है और इसके लिए कच्छ के लोगों का हौंसला और उनकी जिजीविषा के बारे मैं अच्छी तरह जानता हूँ। दो दशक पहले के विनाशकारी भूकंप के बाद जिस कच्छ के बारे में कहा जाता था कि वो कभी उठ नहीं पाएगा, आज, वही जिला, देश के तेजी से विकसित होते जिलों में से एक है। मुझे विश्वास है, Cyclone बिपरजॉय ने जो तबाही मचाई है, उससे भी कच्छ के लोग बहुत तेजी से उभर जाएंगे।

प्राकृतिक आपदाओं पर किसी का ज़ोर नहीं होता, लेकिन, बीते वर्षों में भारत ने आपदा प्रबंधन की जो ताकत विकसित की है, वो आज एक उदाहरण बन रही है। प्राकृतिक आपदाओं से मुकाबला करने का एक बड़ा तरीका है – प्रकृति का संरक्षण। आजकल, Monsoon के समय में तो, इस दिशा में, हमारी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ जाती है। इसीलिए ही आज देश, Catch the Rain जैसे अभियानों के जरिए सामूहिक प्रयास कर रहा है। पिछले महीने 'मन की बात' में ही हमने जल संरक्षण से जुड़े Start-Ups की चर्चा की थी। इस बार भी मुझे चिट्ठी लिखकर कई ऐसे लोगों के बारे में बताया गया है जो पानी की एक–एक बूंद बचाने के लिए जी–जान से लगे हैं। ऐसे ही एक साथी हैं – यूपी के बांदा जिले के तुलसीराम यादव जी। तुलसीराम यादव जी लुकतरा ग्राम पंचायत के प्रधान हैं। आप भी जानते हैं कि बांदा और बुंदेलखंड क्षेत्र में पानी को लेकर कितनी कठिनाईयाँ रही हैं। इस चुनौती से पार पाने के लिए तुलसीराम जी ने गाँव के लोगों को साथ लेकर इलाके में 40 से ज्यादा तालाब बनवाए हैं। तुलसीराम जी ने अपनी मुहिम का आधार बनाया है – खेत का पानी खेत में, गाँव का पानी गाँव में। आज उनकी मेहनत का ही नतीजा है कि उनके गाँव में भू–जल स्तर सुधर रहा है। ऐसे ही यू.

पी. के हापुड़ जिले में लोगों ने मिलकर के एक विलुप्त नदी को पुनर्जीवित किया है। यहाँ काफी समय पहले नीम नाम की एक नदी हुआ करती थी। समय के साथ वो लुप्त हो गई, लेकिन, स्थानीय स्मृतियाँ और जन–कथाओं में उसे हमेशा याद किया जाता रहा। आखिरकार, लोगों ने अपनी इस प्राकृतिक धरोहर को फिर से सजीव करने की ठानी। लोगों के सामूहिक प्रयास से अब 'नीम नदी' फिर से जीवंत होने लगी है। नदी के उद्गम स्थल को अमृत सरोवर के तौर भी विकसित किया जा रहा है।

ये नदी, नहर, सरोवर, ये केवल जल–स्त्रोत ही नहीं होते हैं, बल्कि इनसे, जीवन के रंग और भावनाएं भी जुड़ी होती हैं। ऐसा ही एक दृश्य अभी कुछ ही दिन पहले महाराष्ट्र में देखने को मिला। ये इलाका ज्यादातर सूखे की चपेट में रहता है। पांच दशक के इंतजार के बाद यहाँ Nilwande Dam (निलवंडे डैम) की Canal का काम अब पूरा हो रहा है। कुछ दिन पहले Testing के दौरान Canal में पानी छोड़ा गया था। इस दौरान जो तस्वीरें आयी, वो वाकई भावुक करने वाली थी। गांव के लोग ऐसे झूम रहे थे, जैसे होली–दिवाली का त्योहार हो।

साथियो, जब प्रबंधन की बात हो रही है, तो मैं, आज, छत्रपति शिवाजी महाराज को भी याद करूंगा। छत्रपति शिवाजी महाराज की वीरता के साथ ही उनकी Governance और उनके प्रबंध कौशल से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। विशेषकर, जल–प्रबंधन और नौसेना को लेकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने जो कार्य किए, वो आज भी भारतीय इतिहास का गौरव बढ़ाते हैं। उनके बनाए जलदुर्ग, इतनी शताब्दियों बाद भी समंदर के बीच में आज भी शान से खड़े हैं। इस महीने की शुरुआत में ही छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक के 350 वर्ष पूरे हुए हैं। इस अवसर को एक बड़े पर्व के रूप में मनाया जा रहा है। इस दौरान महाराष्ट्र के रायगढ़ किले में इससे जुड़े भव्य कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। मुझे याद है, कई वर्ष पहले 2014 में, मुझे, रायगढ़ जाने, उस पवित्र भूमि को नमन करने का सौभाग्य मिला था। यह हम सबका कर्तव्य है कि इस अवसर पर हम छत्रपति शिवाजी महाराज के प्रबंध कौशल को जानें, उनसे सीखें। इससे हमारे भीतर, हमारी विरासत पर गर्व का बोध भी जगेगा, और भविष्य के लिए कर्तव्यों की प्रेरणा भी मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, आपने रामायण की उस नन्हीं गिलहरी के बारे में जरुर सुना होगा, जो, रामसेतु बनाने में मदद करने के लिए आगे आई थी। कहने का मतलब ये, कि जब नीयत साफ हो, प्रयासों में ईमानदारी हो, तो फिर कोई भी लक्ष्य, कठिन नहीं रहता। भारत भी, आज, इसी नेक नीयत से, एक बहुत बड़ी चुनौती का मुकाबला कर रहा है। ये चुनौती है – टी.बी. की, जिसे क्षय रोग भी कहा जाता है। भारत ने संकल्प किया है 2025 तक, टी.बी. मुक्त भारत, बनाने का – लक्ष्य बहुत बड़ा ज़रूर है । एक समय था, जब, टी.बी. का पता चलने के बाद परिवार के लोग ही दूर हो जाते थे, लेकिन ये आज का समय है, जब टी.बी. के मरीज को परिवार का सदस्य बनाकर उनकी मदद की जा रही है। इस क्षय रोग को जड़ से समाप्त करने के लिए, निक्षय मित्रों ने, मोर्चा संभाल लिया है। देश में बहुत बड़ी संख्या में विभिन्न सामाजिक संस्थाएं निक्षय मित्र बनी हैं। गाँव–देहात में, पंचायतों में, हजारों लोगों ने खुद आगे आकर टी.बी. मरीजों को गोद लिया है। कितने ही बच्चे हैं, जो, टीबी मरीजों की मदद के लिए आगे आए हैं। ये जन–भागीदारी ही इस अभियान की सबसे बड़ी ताकत है। इसी भागीदारी की वजह से आज देश में 10 लाख से ज्यादा टी.बी. मरीजों को गोद लिया जा चुका है और ये पुण्य का काम किया है, क़रीब–करीब 85 हजार निक्षय मित्रों ने। मुझे खुशी है कि, देश के कई सरपंचों ने, ग्राम प्रधानों ने भी, ये बीड़ा उठा लिया है कि वो, अपने गांव में टी.बी. को समाप्त करके ही रहेंगे।

हम भारतवासियों का स्वभाव होता है कि हम हमेशा नए विचारों के स्वागत के लिए तैयार रहते हैं। हम अपनी चीज़ों से प्रेम करते हैं और नई चीज़ों को आत्मसात भी करते हैं। इसी का एक उदाहरण है – जापान की तकनीक मियावाकी, अगर किसी जगह की मिट्टी उपजाऊ नहीं रही हो, तो मियावाकी तकनीक, उस क्षेत्र को, फिर से हरा–भरा करने का बहुत अच्छा तरीका होती है। मियावाकी जंगल तेजी से फैलते हैं और दो–तीन दशक में जैव विविधता का केंद्र बन जाते हैं। अब इसका प्रसार बहुत तेजी से भारत के भी अलग–अलग हिस्सों में हो रहा है। हमारे यहाँ केरला के एक शिक्षक श्रीमान राफी रामनाथ जी ने इस तकनीक से एक इलाके की तस्वीर ही बदल दी। दरअसल, रामनाथ जी अपन छात्रों को, प्रकृति और पर्यावरण के बारे में गहराई से समझाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने एक हर्बल गार्डन ही बना डाला। उनका ये गार्डन अब एक Biodiversity Zone बन चुका है। उनकी इस कामयाबी ने उन्हें और भी प्रेरणा दी। इसके बाद राफी जी ने मियावाकी तकनीक से एक छोटा जंगल और इसे नाम दिया –

'विद्यावनम्' | अब इतना खूबसूरत नाम तो एक शिक्षक ही रख सकता है – 'विद्यावनम्'। रामनाथ जी के इस 'विद्यावनम्' में छोटी सी जगह में 115 प्रकार के 450 से अधिक पेड़ लगाए गए। उनके छात्र भी इनके रखरखाव में उनका हाथ बटाते हैं। आजकल हमारे देश में जम्मू–कश्मीर की खूब चर्चा होती है। कभी बढ़ते पर्यटन के कारण, तो कभी G–20 के शानदार आयोजनों के कारण। कुछ समय पहले मैंने 'मन की बात' में आपको बताया था कि कैसे कश्मीर के 'नादरू' देश के बाहर भी पसंद किए जा रहे हैं। अब जम्मू–कश्मीर के बारामूला जिले के लोगों ने एक कमाल कर दिखाया है। बारामूला में खेती–बाड़ी तो काफी समय से होती है, लेकिन यहाँ, दूध की कमी रहती थी। बारामूला के लोगों ने इस चुनौती को एक अवसर के रूप में लिया। यहाँ बड़ी संख्या में लोगों ने डेयरी का काम शुरू किया। इस काम में सबसे

अलग–अलग राज्यों में बहुत धूमधाम से भगवान जगन्नाथ की रथयात्रा निकाली जाती है। ओडिशा के पुरी में होने वाली रथयात्रा तो अपने आपमें अद्भुत होती है। जब मैं गुजरात में था, तो मुझे, अहमदाबाद में होने वाली विशाल रथयात्रा में शामिल होने का अवसर मिलता था। इन रथयात्राओं में जिस तरह देश भर के, हर समाज, हर वर्ग के लोग उमड़ते हैं वो अपने आपमें बहुत अनुकरणीय है। ये आस्था के साथ ही 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' का भी प्रतिबिम्ब होती है।

भारतीय परंपरा और संस्कृति से जुड़े उत्सव की चर्चा करते हुए, मैं, देश के राजभवनों में हुए दिलचस्प आयोजनों का भी जरुर उल्लेख करूँगा। अब देश में राजभवनों की पहचान, सामाजिक और विकास कार्यों से होने लगी है। आज, हमारे राजभवन, टी.बी. मुक्त भारत अभियान के, प्राकृतिक खेती से जुड़े अभियान के,

आगे यहाँ की महिलाएं आईं, जैसे कि एक बहन हैं – मीर सिस्टर्स डेयरी फार्म' शुरू किया है। उनके डेयरी फार्म से हर दिन करीब डेढ़–सौ लीटर दूध की बिक्री हो रही है। ऐसे ही सोपोर के एक साथी हैं – वसीम अनायत। वसीम के पास दो दर्जन से ज्यादा पशु हैं और वो हर दिन दो–सौ लीटर से ज्यादा दूध बेचते हैं।

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप, योग को अपने जीवन में जरुर अपनाएं, इसे, अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाएं। अगर अब भी आप योग से नहीं जुड़े हैं तो आने वाली 21 जून, इस संकल्प के लिए बहुत बेहतरीन मौका है। योग में तो वैसे भी ज्यादा तामझाम की जरुरत ही नहीं होती है। देखिये, जब आप योग से जुड़ेंगे तो आपके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन आएगा।

20 जून को ऐतिहासिक रथयात्रा का दिन है। रथयात्रा की पूरी दुनिया में एक विशिष्ट पहचान है। देश के

ध्वजवाहक बन रहे हैं। बीते समय में गुजरात हो, गोवा हो, तेलंगाना हो, महाराष्ट्र हो, सिक्किम हो, इनके स्थापना दिवस को, अलग–अलग राजभवनों ने जिस उत्साह के साथ celebrate किया, वह अपने आप में एक मिसाल है। यह एक बेहतरीन पहल है जो 'एक भारत–श्रेष्ठ भारत' की भावना को सशक्त बनाती है।

भारत लोकतंत्र की जननी है, हम अपने लोकतांत्रिक आदर्शों को सर्वोपरि मानते हैं, अपने संविधान को सर्वोपरि मानते हैं, इसलिए, हम 25 जून को भी कभी भुला नहीं सकते। यह वही दिन है जब हमारे देश पर Emergency थोपी गई थी। यह भारत के इतिहास का काला दौर था। लाखों लोगों ने Emergency का पूरी ताकत से विरोध किया था। लोकतंत्र के समर्थकों पर उस दौरान इतना अत्याचार किया गया, इतनी यातनाएं दी गईं कि आज भी, मन, सिहर उठता है।

भाजपा के 44वें स्थापना दिवस पर विशेष

वैचारिकी

अंधेरा छंटेगा, सूरज निकलेगा, कमल खिलेगा

मुंबई में आयोजित भाजपा राष्ट्रीय परिषद् में 28 दिसंबर, 1980 को श्री अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा दिए गए अध्यक्षीय भाषण का पांचवा भाग-

भारत सोवियत संघ संबंध में असामंजस्यता

स्वतंत्र पर्यवेक्षक यदि यह निष्कर्ष निकालते हैं कि भारत सोवियत मैत्री एक गठबंधन का रूप ले रही हैं तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। हमारे देश की समूची जनता, यहां के सभी राजनीतिक दल सोवियत संघ के साथ हमारे देश के मैत्री संबंधों को और अधिक मजबूत देखना चाहते हैं। जनता शासन में, कुछ क्षेत्रों में व्यक्त आशंकाओं को झुठलाते हुए इन संबंधों में अधिक गहराई तथा व्यापकता लाई गई थी, किंतु सोवियत संघ के साथ द्विपक्षी संबंधों को अधिक अर्थपूर्ण तथा लाभदायक बनाना एक बात है और यह भाव पैदा होने देना बिलकुल दूसरी बात कि विश्व की घटनाओं के बारे में सोवियत संघ से पृथक् हमारे देश का अपना कोई युद्ध–नीतिक बोध नहीं है।

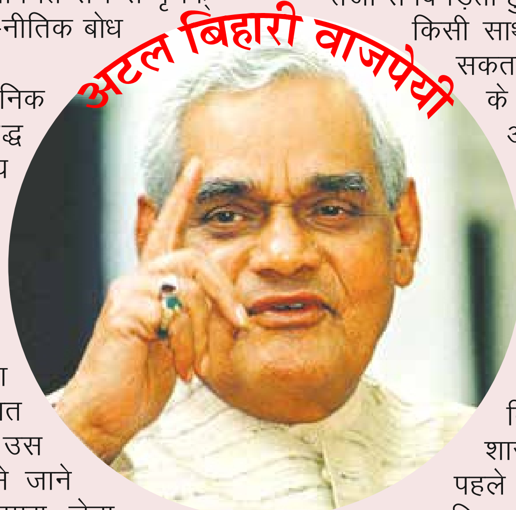

अफगानिस्तान में सोवियत सैनिक हस्तक्षेप और उसके विरुद्ध अमेरिका तथा उससे जुड़े अन्य देशों की प्रतिक्रिया से इस भूखंड में जो नई परिस्थिति पैदा हुई थी, उसके प्रकाश में भारत और पाकिस्तान–दोनों को भूतकाल को भूलकर अपने संबंधों में एक नए अध्याय का आरंभ करना चाहिए था। यह अफसोस की बात है कि दोनों देशों के नेतृत्व ने उस ऐतिहासिक अवसर को हाथ से जाने दिया। पाकिस्तान को यह समझ लेना चाहिए कि खैबर के दर्रे पर सोवियत सेना की उपस्थिति से उसकी सुरक्षा के लिए उत्पन्न संकट का निराकरण–विश्व में जहां से भी मिले, वहां से हथियार एकत्र करने से नहीं होगा।

मजबूत पाकिस्तान भारत के हित में

हमारे देश को यह समझ लेना है कि इसके और सोवियत संघ के बीच बफर के रूप में विद्यमान पाकिस्तान की स्थिरता तथा सुदृढ़ता उसके हित में है। पाकिस्तान की वर्तमान कठिनाई से लाभ उठाने की लालसा आखिर भारत के लिए ही बहुत महंगी पड़ सकती है।

पाकिस्तान के साथ संबंधों में उत्पन्न गतिरोध को दूर करने के लिए पहल भारत सरकार को करनी चाहिए। भाजपा के उपाध्यक्ष श्री जेठमलानी जब कुछ मास पूर्व अफगान शरणार्थियों की समस्याओं के संबंध में पाकिस्तान गए थे, तब पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया ने भारत के पाकिस्तान स्थित राजदूत की उपस्थिति में, उनसे कहा था कि पाकिस्तान युद्ध नहीं, समझौता करने के लिए तैयार है। हमें इस मामले को आगे बढ़ाना चाहिए था। हमें पीकिंग के साथ भी उच्च स्तर पर फिर से वार्त्तालाप प्रारंभ करने के लिए कदम उठाना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में दृढ़ता और निर्भीकता

तेजी से बिगड़ती हुई अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति में भारत किसी सार्थक भूमिका का निर्वाह तभी कर सकता है, जब वह दृढ़ता और निर्भीकता के साथ राष्ट्रों की स्वतंत्रता के अपहरण, सीमाओं के उल्लंघन और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के विरुद्ध असंदिग्ध शब्दों में अपनी आवाज बुलंद करे। इसे अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी नैतिक बल से काम लेना चाहिए।

बहानों की तलाश

सभी मोरचों पर अपनी भारी विफलता पर परदा डालने के लिए शासन नित्य नए बहाने गढ़ता है। पहले 6 महीने यह कहकर गुजार दिए गए कि जनता सरकार के 28 महीनों में गाड़ी पटरी से उत्तर गई थी, धरती में धंस गई थी, उसे पुनः पटरी पर लाने में वक्त लगेगा। अगले 6 महीने यह कहकर काटे जा रहे हैं कि क्या करें, विरोधी दल कुछ करने ही नहीं देता!

जनता शासन में दिल्ली में महिलाओं के गले से सोने की जंजीरें छीन लिये जाने की इक्का–दुक्का घटनाओं पर आसमान सर पर उठानेवाले लोग आज दिन–दहाड़े होनेवाली डकैतियों को लूटमार बताने के लिए कानूनी बाल की खाल खींचने से नहीं झिझकते रंगा और बिल्ला की गिरफ्तारी में हुई देर के विरोध में मेरे माथे को पत्थर से लहूलुहान करनेवाले जयसिंघानी के हत्यारों का पता

लगाने, श्रीमती पूर्णिमा सिंह की मृत्यु पर पड़े रहस्य के परदे को उठाने तथा निरंकारी बाबा की हत्या के लिए उत्तरदायी सभी अपराधियों को गिरफ्तार करने में पुलिस प्रशासन की विफलता के खिलाफ मुंह तक नहीं खोलते।

बिहार में पिपरा और परसबीघा की पीड़ा, बेलछी की पीड़ा से किसी मात्रा में कम नहीं थी। किंतु वहां जाने के लिए प्रधानमंत्री को सरकारी हेलीकॉप्टर का उपयोग करने का भी ध्यान नहीं आया, जब बेलछी जाने के लिए हाथी की सवारी करने में भी उन्हें संकोच नहीं हुआ नारायणपुर के कांड के लिए विरोधी दल की सरकार को बरखास्त करनेवाली प्रधानमंत्री मुरादाबाद में सैकड़ों लोगों की हत्या को रोकने में विफल प्रदेश सरकार के मुख्यमंत्री का त्यागपत्र मंजूर करने के लिए भी तैयार नहीं हुई। आज वे विरोधी दलों पर हर घटना का राजनीतिक लाभ उठाने का आरोप करते हुए नहीं थकतीं। किंतु उन्होंने स्वयं नारायणपुर में क्या कहा थाकृ इसे वे सरलता से भूल गई जान पड़ती हैं। उन्होंने कहा था कि यदि सरकार गलती करती है तो विरोधी दल उसका फायदा क्यों न उठाएं!

किसान संघर्ष

वस्तुस्थिति यह है कि देश के विभिन्न भागों में जन–आंदोलनों की जो लहर आई है, यह स्वयंस्फूर्त है। असम में विदेशियों की घुसपैठ के विरुद्ध पिछले एक वर्ष से चल रहा आंदोलन, जिसने जन समर्थन तथा जन सहयोग की व्यापकता की दृष्टि से स्वतंत्रता आंदोलन को बनाए रखने के लिए कटिबद्ध युवाशक्ति का एक राष्ट्रीय अनुष्ठान है। दलगत राजनीति अथवा राजनीतिक दलों से उसका कोई संबंध नहीं है।

कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश आदि में किसान अपनी मांगों को मनवाने के लिए जो संघर्ष कर रहे हैं, वह राजनीतिक दलों द्वारा प्रेरित नहीं है। सभी किसान चाहे वे किसी भी राजनीतिक दल से संबद्ध हों; इसमें सत्तारूढ़ दल से जुड़े हुए किसान भी शामिल हैं, इस लड़ाई में भाग ले रहे हैं।

आसमान छूती महंगाई

पिछले कुछ वर्षों में किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ी है। रासायनिक खाद, पानी, बिजली, डीजल, बीज आदि के दाम बढ़े हैं, किंतु उस अनुपात में उपज के मूल्य नहीं बढ़े। अकृषि वस्तुओं की भारी महंगाई ने भी किसान को बुरी तरह प्रभावित किया है। वह उत्पादक के साथ उपभोक्ता भी है।

ग्रामीण ऋणग्रस्तता

ग्रामीण ऋणग्रस्तता के आंकड़े चौंकानेवाले हैं। कुछ वर्ष पहले ग्रामीण क्षेत्र में जो ऋण बकाया थे, उनकी राशि 750 करोड़ रुपए थी। अब यह बढ़कर 6000 करोड़ रुपए हो गई है। 85 फीसदी किसान कर्ज में डूबे हैं। भारतीय जनता पार्टी किसानों की लाभप्रद मूल्यों की मांग को सर्वथा उचित समझती है और उसका पूरी तरह समर्थन करती है।

जब तक गन्ना और चीनी, कपास और कपड़ा, मूंगफली और वनस्पति तेल, और जूट से बने सामान की कीमतों में कोई अनुपात कायम नहीं किया जाता, तब तक कच्चे माल के उत्पादकों का शोषण होता रहेगा और औद्योगिक माल के निर्माता अंधाधुंध मुनाफा कमाते रहेंगे।

कपास की गिरती कीमतें

पिछले कुछ वर्षों में कपड़े के दामों में तीन गुना वृद्धि हुई है, किंतु कपास के दाम गिरे हैं। आंध्र प्रदेश का प्रसिद्ध कपास वरलक्ष्मी, जिसकी कीमत पहले 1200–1500 रुपया प्रति क्विंटल थी, अब 500 रुपए तक नीचे आ गई है। जूट उत्पादन का लागत मूल्य 192 रुपए प्रति टन है, जबकि सरकार द्वारा निश्चित कीमत मात्र 150 रुपए प्रति टन है।

आंध्र प्रदेश में सरकार ने धान का समर्थन मूल्य 105 रुपए प्रति क्विंटल तय किया था, किंतु खरीद का समुचित प्रबंध न होने के कारण किसानों को अपना धान 75 रुपए प्रति क्विंटल के भाव से बेचने के लिए विवश होना पड़ा। यह स्थिति अन्यत्र तथा अन्य फसलों के सिलसिले में भी हुई है।

कृषि उत्पाद मूल्य

कृषि मूल्य आयोग अपने कर्तव्यों का पालन करने में विफल रहा है। उसे भंग कर दिया जाए और एक नई संस्था का गठन किया जाए, जो कृषि उपज के मूल्य का निर्धारण करते समय लागत खर्च के साथ–साथ औद्योगिक माल की कीमतों, किसान के बढ़ते हुए खर्चों तथा उसकी आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखे।

किसानों में जागृति

सदियों की तंद्रा त्यागकर किसान अपना न्यायोचित अधिकार पाने के लिए उठ खड़ा हुआ है। देश को अन्न की दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने और अरबों की विदेशी मुद्रा बचाने का श्रेय किसानों को है। छोटे–बड़े के आधार पर किसान आंदोलन में फूट डालने या ग्रामीण उत्पादक तथा शहरी उपभोक्ता के बीच भेद पैदा करने की कोशिश सफल नहीं होगी। आंदोलन से ग्रामीण क्षेत्रों में फैली भूमिहीन मजदूरों को भी लाभान्वित करेगी।

खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि

सरकार को चाहिए कि किसानों को विश्वास में ले और उनके साथ परामर्श करके अन्नोत्पादन को दुगुना करने का एक समयबद्ध कार्यक्रम बनाए। विश्व काफी लंबे समय तक अन्न की कमी से पीड़ित रहनेवाला है। अन्न का बड़ा निर्यातक देश बनने की पूरी संभावनाएं हमारे देश में विद्यमान है।

श्रद्धांजलि

श्री हरद्वार दूबे जी पंचतत्व में विलीन

भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता राज्य सभा सदस्य श्री हरद्वार दूबे जी का नई दिल्ली में बीमारी के कारण निधन हो गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा ने भाजपा के वरिष्ठ नेता, पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री तथा राज्यसभा के सदस्य श्री हरद्वार दुबे के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया।

केन्द्रीय राज्य मंत्री साध्वी निरंजन ज्योति, भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अरूण सिंह, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उपमुख्यमंत्री श्री केशव प्रशाद मौर्य, श्री ब्रजेश पाठक, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने राज्यसभा सांसद श्री हरद्वार दुबे जी के जनपद आगरा स्थित आवास पर पहुंचकर पार्थिव शरीर पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी एवं शोकाकुल परिजनों से भेंट कर शोक संवेदना व्यक्त की। उन्होने कहा कि वरिष्ठ नेता एवं माननीय राज्यसभा सांसद श्री हरद्वार दुबे जी का निधन अत्यंत दुखद है। वह धरातल से जुड़े नेता थे, उत्तर प्रदेश के विकास में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रहेगी।

प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह ने राज्यसभा सांसद श्री हरद्वार दुबे के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि वरिष्ठ भाजपा नेता, माननीय राज्यसभा सांसद एवं उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री श्री हरद्वार दुबे जी का निधन अत्यंत दुखःद है।

स्व0 दुबे मूल रूप से बलिया के रहने वाले थे। वह 1969 में आगरा में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद का कार्य किया। 1989 में, उन्होंने आगरा छावनी सीट से चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। उन्होंने 1991 का चुनाव फिर से जीता और उन्हें कल्याण सिंह मंत्रिमंडल में वित्त राज्य मंत्री बनाया गया। 2005 में, उन्होंने खेरागढ़ विधानसभा सीट से उपचुनाव लड़ा, लेकिन असफल रहे। 2011 में उन्होंने बीजेपी के प्रदेश प्रवक्ता और 2013 में प्रदेश उपाध्यक्ष का पद संभाला, उनके निधन से संघपरिवार, भाजपा कार्यकर्ताओं में शोक की लहर है। बड़ी संख्या में वरिष्ठ नेता, कार्यकर्ता उनकी अंत्येष्टि में शामिल हो उन्हें श्रद्धा सुमन अर्पित किये।

योगी आदित्यनाथ

किसानों को उपहार - डबल इंजन की सरकार
वाराणसी के एकीकृत पैक हाउस से निर्यात किए जाने वाले
आम और हरी सब्जियों

मेरा बूथ सबसे मजबूत
कार्यशाला

मेरा बूथ सबसे मजबूत
कार्यशाला
मा. धर्मपाल सिंह

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91, शीर्षक कोडः UPHIN16701, डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2022-23
जून द्वितीय 2023 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।